www.thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द-१९२
सृष्टि सं.-१९७२९४९११७
मानव सृष्टि संवत्- १९६०८५३११७

वर्ष-15 अंक- 18 पौष शु. 3 से माघ कृ. 3 सं. 2073 वि. 1-15 जनवरी 2017 अमरोहा (उ.प्र.) पृ.- 12 मूल्य- 5/-

आर्यावर्त केसरी के संरक्षक

श्रीराम गुप्ता नहीं रहे

अमरोहा। जगदीश सरन हिंदू स्नातकोत्तर महाविद्यालय में श्रीराम विज्ञान संकाय के संस्थापक, श्रीराम पब्लिक इंटर कालेज व श्रीराम पब्लिक स्कूल के संस्थापक **एवं आर्यावर्त केसरी के संरक्षक** श्रीराम गुप्ता (87) का सुबह सवा दस बजे निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्रगण प्रोफेसर अरविन्द गुप्ता, अवनीश गुप्ता, अनिल गुप्ता, पत्नी, पौत्र–पौत्रियों सहित भरा–पूरा परिवार छोड़ गये हैं। वे पिछले चार माह से पैर की हड्डी टूट जाने के कारण बिस्तर पर थे। उनके निधन से नगर व क्षेत्र भर में शोक की लहर दौड़ गयी। नगर के जे0एस0 हिन्दू डिग्री कालेज, जे0एस0 हिन्दू इन्टर कालेज तथा श्रीराम पब्लिक इंटर कालेज में निधन का समाचार मिलते ही शोकसभा के बाद अवकाश कर दिया गया। निश्चय ही उनके निधन से समाज को एक अपूर्णनीय क्षति हुई है। उनके रूप में नगरवासियों ने एक दानवीर तथा निःस्वार्थ समाजसेवी खो दिया है।

श्री गुप्ता जी का सम्पूर्ण जीवन समाज के लिए समर्पित रहा। वे जीवन भर सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक व सांस्कृतिक संगठनों के लिए मुक्त हस्त से सहयोग देते रहे। उन्होंने महाविद्यालय से सेवानिवृत्ति के बाद मिले अपने फण्ड तथा आगे मिलने वाली अपनी पेंशन तक बेचकर जुटायी गयी राशि को भी दानस्वरूप समाज के लिए ही अर्पित कर दिया। उन्होंने अपनी जीवन भर की पूंजी से श्रीराम सेवा ट्रस्ट (पंजी.) की स्थापना की, तथा महाविद्यालय में श्रीराम विज्ञान संकाय की स्थापना के लिए सन् 1996 में दस लाख रुपये का दान दिया।

वे हमेशा अपनी दानशीलता के लिए याद किये जाते रहेंगे। उन्होंने नगर व क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं को यथा सामर्थ्य सहयोग प्रदान किया। इस कड़ी में संस्कृतिक समाज अमरोहा के द्वार के निर्माण हेतु रु0 एक लाख पचास हजार, आर्य समाज के मुख्य द्वार के लिए एक लाख रुपये भेंट किये। इसी प्रकार वासुदेव तीर्थ स्थित श्री डोंगरे जी महाराज वृद्धाश्रम, रियासत मंदिर कोट, मोक्षधाम, रामायण संकीर्तन मंडल, आर्य उप प्रतिनिधि सभा, भारत विकास परिषद, श्री गंगा सेवा समिति, श्री रामलीला कमेटी रजि0, संस्कार भारती, सेवा भारती आदि सहित विभिन्न संगठनों व संस्थाओं को वे सदैव आर्थिक सहयोग प्रदान करते रहे। वे अनेक संस्थाओं के संरक्षक, संस्थापक, अध्यक्ष, मंत्री व कोषाध्यक्ष रहे। उनके निधन का समाचार मिलते ही उनके अन्तिम दर्शनों तथा परिजनों को सांत्वना देने के लिए नगरवासियों की भीड़ उमड़ पडी। नगर की विभिन्न संस्थाओं, मित्रों तथा शुभचिन्तकों ने उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति की कामना की।

राष्ट्रीय सम्मेलन 1 से

हैदराबाद। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना द्वारा 2 से 4 फरवरी तक राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं प्रतिनिधि सम्मेलन हैदराबाद में होगा। यह जानकारी स्वामी आर्यवेश प्रधान (9013783101), सामदेव शास्त्री संयोजक व प्रो0 बिट्ठल राय आर्य ने दी है।

सार्वदेशिक सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का
१७वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन
होगा 22 जनवरी 2017 को आर्यसमाज, अशोक विहार, फेज-1, एफ-5, नई दिल्ली में
–अर्जुन देव चड्डा संयोजक (9414187428)

टंकारा में भव्य ऋषि बोधोत्सव २३ से

आर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में भी रवाना होगा आर्यों का जत्था

टंकारा। महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मभूमि टंकारा में 23 से 25 फरवरी 2017 तक शिवरात्रि के अवसर पर भव्य ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न होगा। ट्रस्ट के महामंत्री रामनाथ सहगल व अजय सहगल ने देश-विदेश के श्रद्धालुओं से समारोह में भारी संख्या में पधारने की अपील की है।

आर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में भी गतवर्षों की भांति आर्यों का विशाल से आला हज़रत एक्सप्रेस से टंकारा के लिए रवाना होगी जो द्वारिका, भेंट द्वारिका, नागेश्वर महादेव, पोरबन्दर एवं भालका तीर्थ, सोमनाथपुरी होते हुए 28 फरवरी को वापस अमरोहा/ मुरादाबाद पहुंचेगी। इस यात्रा के दौरान सभी श्रद्धालुजन अनेक ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों का

भ्रमण करेंगे, जिनमें टंकारा स्थित ऋषि जन्मभूमि एवं ऐतिहासिक शिवालय, द्वारिका, भेंट द्वारिका, महात्मा गांधी जन्म स्थल, गुरुकुल, सुदामा महल, नागेश्वर महादेव, भालका तीर्थ- जहां श्रीकृष्ण को तीर लगा था तथा सोमनाथ मंदिर आदि प्रमुख हैं। यह जत्था इस वर्ष भी टंकारा रवाना होगा। 19 फरवरी 2017 को यह यात्रा मुरादाबाद व अमरोहा से आला हज़रत एक्सप्रेस से टंकारा के लिए रवाना होगी जो द्वारिका, भेंट द्वारिका, नागेश्वर महादेव, पोरबन्दर एवं भालका तीर्थ, सोमनाथपुरी होते हुए 26 फरवरी को वापस अमरोहा/ मुरादाबाद पहुंचेगी। इस यात्रा के दौरान सभी श्रद्धालुजन अनेक ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों का भ्रमण करेंगे, जिनमें टंकारा स्थित ऋषि जन्मभूमि एवं ऐतिहासिक शिवालय, द्वारिका, भेंट द्वारिका, महात्मा गांधी जन्म स्थल, गुरुकुल, सुदामा महल, नागेश्वर महादेव, भालका तीर्थ तथा सोमनाथ मंदिर आदि प्रमुख हैं।

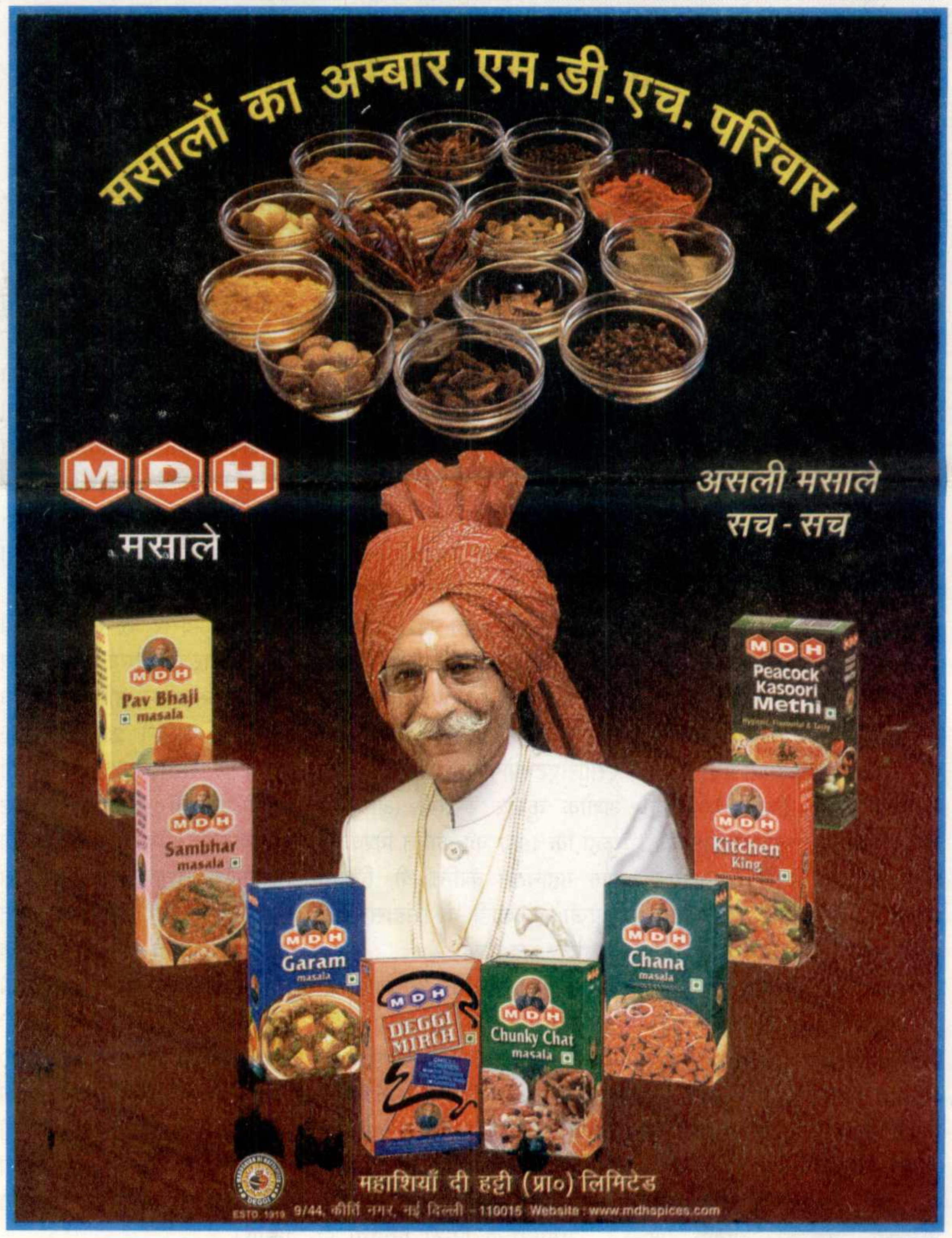

www.thearyasamaj.org

आर्यावर्त केसरी के तत्वावधान में शहीद दिवस समारोह

चेतन चौहान, डॉ. व्यस्त सहित क्षेत्रवासियों ने किया काकोरी के अमर शहीदों को शत् शत् नमन्

अमरोहा। आर्यावर्त केसरी प्रबन्ध समिति के तत्वावधान में काकोरी केस के अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खां 'हसरत वारसी', राजेन्द्र लाहिड़ी व ठाकुर रोशनसिंह की शहादत के उपलक्ष्य में 19 दिसम्बर को शहीद दिवस समारोह का आयोजन निकटवर्ती ग्राम शादपुर स्थित के.पी. इण्टर कॉलेज तथा ग्राम नगला स्थित एस.एस. चिल्ड्रन एकेडमी में भव्यता पूर्वक किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में निफ्ट के चेयरमैन तथा पूर्व सांसद अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेटर चेतन चौहान ने कहा कि अमर शहीदों ने अपना बलिदान देकर देश को आजादी दिलाई। आज सम्पूर्ण राष्ट्र इन महान जाबाजों के प्रति कृतज्ञतापूर्वक नतमस्तक है।

शहीद दिवस समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए एम.एल.सी. डॉ. जयपाल सिंह व्यस्त ने कहा कि 09 अगस्त 1925 को लखनऊ के निकट काकोरी स्टेशन से पूर्व रेल रोककर महान क्रान्तिकारियों ने सरकारी खजाना लूटकर अंग्रेजी साम्राज्यवाद को कड़ी चुनौती दी थी। इस कांड में अंग्रेजी हुकूमत ने 40 क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया, जिनमें बिस्मिल, अश्फाक, लाहिड़ी तथा रोशनसिंह को फांसी तथा शचीन्द्र सान्याल को आजीवन कारावास और मन्मथनाथ गुप्ता को 14 साल की कठोर कैद की सजा सुनाई गयी।

इस अवसर पर आर्यावर्त केसरी के सम्पादक डॉ. अशोक कुमार आर्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि क्रांतिकारियों में अभूतपूर्व राष्ट्रभक्ति का जज़्बा था। वे भारत में स्वराज्य देखना चाहते थे। वे दीवानगी की सारी हदें पार कर चुके थे।

समारोह में जे.एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज में हिन्दी की एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष डॉ. बीना रुस्तगी ने काकोरी कांड के विषय में विस्तार से जानकारी दी।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय जगमाल सिंह आर्य ने जब बिस्मिल की ग़ज़ल 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाज़ू ए कातिल में है', सुनाई तो सम्पूर्ण परिसर अमर शहीदों के जयघोष से गूंज उठा।

समारोह में ओज के कवि विमल किशोर वन्देमातरम ने अपनी कविताओं से वाहवाही लूटी। उन्होंने कहा कि 'देश की खातिर जिन्होंने झोंक दी अपनी जवानी, हम सुनाएंगे जगत को उन शहीदों की कहानी'।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दोनों ही स्थानों पर राष्ट्र कल्याण यज्ञ से हुआ। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा लालकिशोर शास्त्री ने राष्ट्र सूक्त से विश्व शान्ति और राष्ट्र कल्याण की कामना की। कार्यक्रम में क्षेत्रवासियों, शिक्षक शिक्षिकाओं एवं छात्र-छात्राओं ने भारी संख्या में भाग लिया। अध्यक्षता मोती सिंह ने की। के.पी. इण्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य कैलाश त्यागी तथा एस.एस. चिल्ड्रन एकेडमी के प्रधानाचार्य राजीव भारद्वाज ने सभी का धन्यवाद किया।

राष्ट्रीय मैरिट में सातवीं रैंक में गुरुकुल चोटीपुरा की छात्रा

गुरुकुल, चोटीपुरा (उ.प्र.) की छात्रा ब्रह्मचारिणी वेदोजना राजे आर्या ने पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार में 'योग साइंस' के राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षा में सातवां स्थान प्राप्त कर, राजस्थान और अपने गुरुकुल चोटीपुरा का नाम रोशन किया है। पूर्व में वेदोजना के छोटे भाई का भी 'आचार्यकुलम, हरिद्वार' की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की 31वीं रैंक प्राप्त कर विश्व बाल प्रतिभा में चयन हुआ। इनके पिता डॉ. आर्य नरेश ने भी राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर से सम्मानित 'विश्व प्रतिभा' का वर्ल्ड अवार्ड प्राप्त किया है।

डॉ० हनुवंत देव सिंह
नाणा, पाली (राजस्थान)

राजस्थान के पाली जिला के नाणा गांव निवासी डॉ० आर्यनरेश हनुवन्तदेव सिंह महेचा ठाकुर की सुपुत्री श्रीमद् दयानन्द कन्या

वैदिक महोत्सव २२ से

पलामू (झारखण्ड)। नव स्थापित आर्य समाज द्वारा निकटवती ग्राम मौहम्मदगंज में 22 से 28 फरवरी 2017 तक वैदिक महोत्सव का धूमधाम से आयोजन किया जा रहा है। संयोजक जयप्रकाश आर्य के अनुसार इस अवसर पर आचार्य विद्या देव यज्ञ के ब्रह्म होंगे तथा सुप्रसिद्ध योगाचार्य स्वामी कर्मवीर जी की भी पधारने की संभावना है। कार्यक्रम के संबंध में 08809165747 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

सावरकरवाद प्रचार सभा की कार्यकारिणी गठित

संस्थापक- इन्द्रदेव गुलाटी
संरक्षक- डॉ0 गिरीश चन्द्र गुप्त
अध्यक्ष- रमेश चन्द सक्सेना वैदिक
अति. अध्यक्ष- शैलेन्द्र सत्यव्रत एड.
कार्य. अध्यक्ष- कालीचरन आर्य
उपाध्यक्ष- वीरसिंह
महामंत्री- राजेश गोयल
वित्तमंत्री- मूलचन्द गोयनका
संगठन मंत्री- महेश चन्द्र विश्वकर्मा
प्रचार मंत्री- ओ३म्प्रकाश
निर्विभागीय मंत्री- अजय कुमार गर्ग
आय-व्यय निरीक्षक-महेश कुमार अरोरा

विश्वभर में व्याप्त थी वैदिक संस्कृति

भारतीय इतिहास संकलन समिति के तत्वावधान में भारतीय संस्कृति का विश्व संचार एवं 1857 की क्रांति पर जे.एस. कॉलेज में हुई संगोष्ठी

अमरोहा। भारतीय इतिहास संकलन समिति के तत्वावधान में 10 दिसम्बर को जे0एस0एच0 (पी0जी0) कॉलेज में आयोजित संगोष्ठी में भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय मंत्री डॉ0 शरद हेवालकर ने कहा कि भारतीय संस्कृति का विश्वभर में संचार हुआ है तथा दुनिया भर में आज भी उसके अवशेष व सन्देश किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं।

मुख्य वक्ता के रूप में अपने सम्बोधन में डॉ0 हेवालकर ने कहा कि प्राचीनकाल में संस्कृत ही एक मात्र लिंक भाषा थी जो सारे विश्व में प्रचलित थी। उन्होंने कहा कि जावा, सुमात्रा, इण्डोनेशिया, टर्की, मिश्र, इटली, अमेरिका, जापान, मैक्सिको, चीन, बर्मा, कम्बोडिया आदि सभी देशों में वैदिक संस्कृति के तत्व व प्रभाव दिखाई देते हैं।

महाविद्यालय में 1857 की क्रान्ति- विविध आयाम तथा भारतीय संस्कृति की विश्व संचार विषय पर आयोजित गोष्ठी में अनेक शोध पत्र प्रस्तुत किये गये।

इस अवसर पर भारतीय इतिहास संकलन समिति के संरक्षक व इतिहासविद डॉ. वासुदेव शर्मा ने कहा कि इतिहास वही होता है जो देशवासियों में राष्ट्रवाद का जागरण कर सके।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 वन्दना रानी गुप्ता ने कहा कि भारतीय इतिहास विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया गया है। यही कारण है कि 1857 की क्रान्ति को विश्व के इतिहास में वह स्थान नहीं दिया गया, जिसकी वह वास्तव में हक़दार थी।

समिति के प्रान्तीय उपाध्यक्ष व राजनीति विज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) ने कहा कि 1857 की क्रान्ति विश्व की एक महानतम क्रान्ति थी, जिसने अंग्रेजी राजशाही के सिंहासन को हिलाकर रख दिया।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व प्राचार्य डॉ0 पी0के0 जैन ने अपने सम्बोधन में कहा कि 1857 की क्रान्ति के अनेक कारण है जिनमें धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व सैनिक कारण आदि प्रमुख हैं।

संगोष्ठी में हिन्दी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष डॉ0 बीना रुस्तगी ने कहा कि इतिहास लेखकों ने भारतीय इतिहास के साथ न्याय नहीं किया। भारत जो अपनी प्राचीन संस्कृति व सभ्यता के लिए दुनियाभर में विख्यात रहा है, उसे उसके यथार्थ रूप में प्रस्तुत न करके भारतीय जनमानस में कुण्ठा उत्पन्न करने की कोशिश की गयी है।

इस अवसर पर संगठन मंत्री राम अवतार ने बताया कि भारतीय इतिहास संकलन समिति प्रान्तीय स्तर पर फरवरी 2017 में एक प्राध्यापक सम्मेलन का आयोजन करेगी जिसमें भारतीय इतिहास की विसंगतियों तथा विकृतियों का निराकरण तथा पुनर्लेखन किस प्रकार किया जाये, विषय पर गहन चर्चा की जायेगी। इसके संयोजक डॉ0 अशोक रुस्तगी नियुक्त किये गये हैं।

संगोष्ठी का संचालन डॉ0 अशोक रुस्तगी ने किया तथा अध्यक्षता डॉ0 पी0के0 जैन ने की तथा अन्त में प्राचार्या डॉ0 वन्दना रानी गुप्ता ने सभी का धन्यवाद किया।

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

यदि आर्यावर्त केसरी न मिले तो...

सम्मानित सदस्यों! आर्यावर्त केसरी आपकी सेवा में प्रत्येक माह की ०१ व १६ तारीख को प्रेषित किया जाता है। दस दिन तक न मिलने पर कृपया दूरभाष पर अवगत कराएं, पुनः प्रेषित किया जायेगा। कहीं-कहीं से ऐसी शिकायतें भी मिलती हैं कि उन्हें आर्यावर्त केसरी लम्बे समय से नहीं मिला है या सदस्यता सहयोग दिये जाने के बाद भी नहीं मिल रहा है, तो इस विषय में अमरोहा-कार्यालय से दूरभाष पर पुष्टि करने के बाद कृपया सम्बन्धित डाकघर के पोस्टमास्टर, अथवा सम्भव हो तो प्रवर अधीक्षक डाकघर (संबंधित प्रखण्ड) से भी इसकी शिकायत करें। हम तो, अपने स्तर पर समुचित कार्यवाही करेंगे ही, ताकि आपको केसरी यथासमय मिलता रहे और डाक के वितरण में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो। धन्यवाद

अमित कुमार- प्रसार प्रभारी, आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)
फोन : 05922-262033, 08941956065

वैदिक संस्कृति व आर्ष परम्परा के प्रचार-प्रसार हेतु गंगा तट पर स्थापित गुरुकुल

श्री देवतीर्थ गंगा गुरुकुल आश्रम

ब्रजघाट, गढ़मुक्तेश्वर (हापुड़) उ.प्र.
सम्पर्क सूत्र- 9968059239, 9911974790

www.thearyasamaj.org

मानव सेवा प्रतिष्ठान व अमेरिकन जाट चेरिटी द्वारा १३ विद्वान तथा विदूषियाँ सम्मानित

रामपाल शास्त्री
रोहतक (हरियाणा)।

मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी के संयुक्त तत्वावधान में 13 नवम्बर को चौधरी छोटूराम धर्मशाला में अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ कन्या गुरुकुल शिखापुरम् की प्राध्यापिका उर्मिला आर्या के ब्रह्मत्व तथा प्रवेश आर्या के संयोजकत्व में आरम्भ हुआ। यजमान डॉ. विवेकानन्द शास्त्री, डॉ. रणवीर सिंह खासा, विनोद हुड्डा, अर्जुन सिंह तथा डॉ. श्यामदेव एवं मानव सेवा प्रतिष्ठान के अधिकारियों एवं छात्र-छात्राओं ने यज्ञ में आहुति प्रदान कीं।

ब्रह्मा ने यज्ञ की महिमा का गुणगान किया एवं संयोजिका प्रवेश आर्या ने सभी यजमानों एवं आर्यजनों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए मानव सेवा प्रतिष्ठान के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

छोटूराम धर्मशाला के विशाल भवन में चन्द्रदेव शास्त्री एवं रामपाल शास्त्री के संयोजन आजाद सिंह लाकड़ा (प्रधान जाट मित्र मंडल) की अध्यक्षता एवं रामस्वरूप आर्य (प्रधान, नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी), देवदत्त जी डबास (प्रधान, मानव सेवा प्रतिष्ठान, यू.एस.ए.), सुमेधा डबास व बालेन्द्र कुण्डु (सदस्य, नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी) तथा मिशिगन, यू.एस.ए. से पधारे चौधरी जयभगवान जागलान, डॉ. सतीश प्रकाश (अमेरिका), पंडित देवानन्द भगेलू (हॉलैण्ड) आदि अतिथियों की उपस्थिति में कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। कन्या गुरुकुल शिखापुरम, अमरोहा, कन्या गुरुकुल ऐंचरा कलां (जींद हरयाणा), कन्या गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली व गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत के वेदपाठियों ने वैदिक ऋचाओं प्रेरणादायी भजनों से जनता जनार्दन को मन्त्रमुग्ध किया।

मानव सेवा प्रतिष्ठान में अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह का दृश्य– केसरी

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह के इस कार्यक्रम में स्वामी सर्वदानन्द (हिसार), आचार्या पुष्पा आर्या (आमसेना), आचार्य धनन्जय (पौंधा), डॉ. सुमन आर्या (हरिद्वार), रामरख आर्य (भिवानी), ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य (हरियाणा), आचार्य नरेन्द्र शास्त्री (हैदराबाद), उर्मिला आर्या (चोटीपुरा), सन्तोष आर्या (मेरठ), आचार्य ऋषिपाल (कीर्तिनगर), आचार्या लक्ष्मी भारती (कैथल), चैतन्य महाराज (रोहतक), ब्रह्मचारी सहन्सरपाल (टिटोली) सहित 13 विद्वान् विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं, भजनोपदेशकों तथा पुरोहितों का सम्मान करते हुए उन्हें अभिनन्दन पत्र, शॉल, स्मृति चिन्ह एवं ग्यारह तथा पन्द्रह हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया गया।

सम्मानित विद्वान विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अभिनन्दन कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि सामाजिक कार्यों में लगे हुए कार्यकर्ताओं का ऐसे उत्साहवर्धन कार्यक्रमों से मनोबल बढ़ता है तथा अन्यों को भी प्रेरणा मिलती है।

स्वामी परमचैतन्य महाराज संस्थापक एवं अध्यक्ष जन सेवा संस्थान (रोहतक) ने सभी को कोई न कोई सेवा कार्य करने की प्रेरणा दी। वहां आचार्य धनन्जय ने छात्रवृत्ति प्राप्त छात्र- छात्राओं को छात्रवृत्ति का उचित उपयोग करते हुए समाज हित में कार्य करने की प्रेरणा दी। चौ. जयभगवान जागलान (यू.एस.ए.) का उद्बोधन जहां छात्र-छात्राओं के लिए प्रेरणा प्रदान करने वाला था वहीं आर्थिक रूप से मानव सेवा प्रतिष्ठान को सबल एवं सक्षम बनाने का वयन देते हुए एक लाख रुपये देने के साथ पन्द्रह लाख रुपये की राशि पूर्ण की तथा मानव सेवा प्रतिष्ठान के माध्यम से गुरुकुल गौतमनगर, कन्या गुरुकुल ऐंचरा कलां (जींद) एवं कन्या गुरुकुल पाढा (करनाल) को दी गई 50 लाख रुपये की सहायता प्रदान करने की चर्चा करते हुए और भी अधिक सहयोग करने का आश्वासन दिया। अपने अनुभवों की चर्चा करते हुए छात्र-छात्राओं को गायत्री मन्त्र के जप करने का विशेष निर्देश दिया।

कालीधाम आश्रम सांपला जैसे सैंतीस आश्रम एवं गौशालाओं का संचालन करने वाले स्वामी कृष्णानन्द परमहंस ने अपने मुखारविन्द से कार्यक्रम की अत्यधिक प्रशंसा करते हुए समस्त कार्यकारिणी को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

आचार्या बहन संतोष आर्या (कन्या गुरुकुल ऐंचरा कला), बेटी बचाओ अभियान की पुरोधा बहन पूनम आर्या, विश्व भारती भैयापुर लाढ़ौत के संस्थापक व आचार्य हरिदत्त जी (उपाध्यक्ष), मास्टर रामकुमार जी गहलावत (सांपला), डॉ. अमरकौर आर्या (कन्या गुरुकुल पाढा), जसवीर सिंह मलिक (रोहतक), राजवीर सिंह राज्याण (रोहतक), डॉ. सतीश प्रकाश (न्यूयोर्क), पूर्व विधायक अजीत सिंह, चौ. छोटूराम के परिवार से प्रदीप जी, प्राचार्य यशवीर सिंह शास्त्री, डॉ. सुखदा शास्त्री, धर्मवीर शास्त्री (रोहतक), डॉ. अनिल दलाल (हिसार) आदि अनेक शिक्षाविद् एवं आचार्यजनों तथा प्रतिष्ठित जनों ने अपने विचारों एवं गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम को सुन्दर बनाया।

नोर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा चयनित सत्तर छात्र- छात्राओं को लगभग चौदह लाख रुपये की सहायता राशि छात्रवृत्ति के रूप में रामस्वरूप आर्य, देवदत्त जी डबास, श्रीमती सुमेधा डबास, बालेन्द्र सिंह, कुण्डु आदि नोर्थ अमेरिकन जाटा चैरिटी के अधिकारियों ने अपने कर-कमलों से वितरित की।

देवदत्त जी डबास ने छात्र-छात्राओं को बधाई देते हुए यह आश्वासन दिया कि कोई छात्र-छात्रा अर्थाभाव में शिक्षा को बीच में न छोड़े, हम ऐसे छात्र-छात्राओं को सहयोग देने के लिए सदा तत्पर हैं। मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा 110 विभिन्न शिक्षा संस्थाओं गुरुकुलों के छात्र-छात्राओं को लगभग साढ़े छह लाख रुपये की राशि वितरित की। आचार्य हरिदत्त उपाध्यक्ष ने अपने उद्बोधन में मानव सेवा प्रतिष्ठान की प्रशंसा की। अध्यक्षता करते हुए आजाद सिंह लाकडा ने की। अन्त में मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकर्त्ता प्रधान रामपाल शास्त्री ने सभी आगन्तुक महानुभावों एवं अभ्यागत अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया, तदुपरान्त ऋषि लंगर भण्डारे के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द से पूर्व स्त्रियों को नहीं था पढ़ने का अधिकार

धू.ग्राम से मनाया वार्षिकोत्सव

कैप्टन अशोक गुलाटी
नोएडा (उ.प्र.)।

आर्यसमाज नोएडा, आर्ष गुरूकुल नोएडा एवं वानप्रस्थाश्रम के तत्वावधान में 7 से 11 दिसम्बर तक वार्षिक महोत्सव मनाया गया। यहां आर्ष गुरूकुल नोएडा के प्राचार्य डॉ0 जयेन्द्र के ब्रह्मत्व में सम्पन्न यज्ञ में उन्होंने कहा कि हवन में वेद मंत्रों के बोलने का विधान है। वेद मंत्रों के पाठ से परमेश्वर की भक्ति होती है तथा उन मंत्रों से हवन के लाभ भी विदित होते रहते हैं। इससे ईश्वरीय वाणी वेदों की रक्षा होती है। उत्सव में आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ने ज्ञान की गंगा प्रवाहित करते हुए कहा कि परमेश्वर की पूजा उसे कुछ पदार्थ देकर नही अपितु उससे लेकर होती है। सांसारिक व्यवहार में पूजा के तीन पदार्थ पूज्य, पूजक व पूजा की सामग्री होते है। माता–पिता व आचार्य आदि व्यवहारिक जगत में पूज्य है। हम जगत के माता–पिता आदि पूज्य देवों की पूजा उनकी आवश्यकतानुसार उन्हें पदार्थ देकर व उनसे परमार्थ की शिक्षा प्राप्त करके करते हैं, किन्तु आध्यात्मिक क्षेत्र में परमेश्वर की पूजा उसे कुछ देकर नही होती अपितु उससे ग्रहण करके ही होती है। कार्यक्रम में स्वामी विश्वानन्द ने कहा कि संसार में सभी प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ योनी मनुष्य योनी मानी जाती है। मनुष्य बाकि प्राणियों से बुद्धि, ज्ञान, विवेक और आचरण के मामले में उत्कृष्ठ है। ज्ञान, विवेक और उत्तम आचरण की शिक्षा हमें वेद से मिलती है। वेद परमात्मा की पवित्र वाणी है। हमें परमात्मा की समीपता हेतु वेद का अध्ययन करना चाहिये।

वैदिक प्रवक्ता डॉ0 नरेन्द्र वेदालंकार ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऋषि दयानन्द से पहले भारतवर्ष में स्त्रियों को पढने का अधिकार नहीं था। कहा जाता था कि स्त्री शुद्रों न धीयताम् अर्थात स्त्रियों को और शुद्रों को मत पढाओ। स्त्रियों को पैर की जूती समझा जाता था और कहा जाता था कि 'जिस नारी के संग से अंधा होत भुजंग उनको कौन हवाल है जो नित नारी संग'। लेकिन महर्षि दयानन्द ने स्त्री को पूज्य बताया। उन्होंने कहा कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता अर्थात नारियों का सम्मान होता है। वहाँ कभी देवताओं का वास होता है।

डॉ0 कर्ण सिंह शास्त्री ने महर्षि द्वारा किये गये नारी शिक्षा, सती प्रथा निषेध तथा विधवा विवाह आदि जैसे उपकारों का वर्णन किया। इस अवसर पर उषा किरण कथूरिया की अध्यक्षता एवं मधु भसीन के संयोजन में महिला सम्मेलन भी हुआ। मख्य अतिथि बिमला बाथम, विधायक ने कहा कि वास्तव में परमात्मा ने प्रशासन का मौलिक रूप नारी के रूप में ही निर्मित किया है।

समापन समारोह में ऐमिटी शिक्षण संस्थान की चेयरपरसन श्रीमती डॉ0 अमिता चौहान ने कहा कि सोचो करने के लिए, सीखो जीतने के लिए और निरंतर सीखते रहो। संस्कृत से संस्कृति आती है और संस्कृति से संस्कार आते हैं।

संचालन मंत्री कैप्टन अशोक गुलाटी ने किया तथा आर्य समाज की प्रधाना गायत्री मीना ने सभी का आभार जताया।

www.thearyasamaj.org

नारी सशक्तिकरण

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहां नारियों का यथोचित सत्कार होता है वहां देवताओं का वास होता है। मनु के इन वचनों को व्यवहार में लाने, नारी-मुक्ति का सूत्रपात करने तथा वन्दनीया मातृशक्ति को उसका वास्तविक स्थान दिलाने में आर्यसमाज के संस्थापक युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान अद्वितीय है। यह सर्वविदित है कि अतीत में जब नारी शक्ति को शिक्षा व वैदिक कर्मकाण्ड से भी वंचित कर दिया गया था, उन्हें न तो वेद के पठन-पाठन और श्रवण का अधिकार था, और न ही समाज में उनकी कोई विशिष्ट स्थिति थी, बल्कि बालविवाह, सतीप्रथा जैसी अमानवीय कुरीतियों से वे अभिशप्त थीं, तब ऐसे समय में ऋषिवर दयानन्द ने ही नारी की वेदना को समझा और उन्हें उनके वास्तविक अधिकार दिलाने के लिए कठोर संघर्ष किया।

निश्चय ही, हमारे वैदिक दर्शन एवं सहस्राब्दियों पूर्व के परम्परागत परिदृश्य में नारी महिमा के उद्गीतों का गायन है। उसे पंचायतन देवपूजा में 'मातृदेवो भव' के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। स्मृतिकारों ने जहां नारी सम्मान की उद्घोषणा की है वहीं वेद-वेदांगों व ब्राह्मणग्रन्थों में मातृशक्ति को 'सहस्रं तु पितृन माता गौर वेणाति रिच्यते' अर्थात् 'दस उपाध्यायों से एक आचार्य, एक सौ आचार्यों से एक पिता व एक सहस्र पिताओं से भी एक माता की श्रेष्ठता नियत कर' उसे सर्वोत्कृष्ट रूप में विभूषित किया है। वैदिक चिन्तन में मातृशक्ति का स्थान सर्वोपरि माना गया है। हमारे शास्त्रकारों ने कहा है कि 'स्त्रीहि ब्रह्मा बभूविथ' अर्थात् माताएं अपने सदन की ही ब्रह्मा न होकर समस्त राष्ट्र की ब्रह्मा होती हैं। नारी शक्ति ही समस्त प्रकार के आध्यात्मिक, राजनीतिक व सामाजिक सशक्तिकरण का आधार है। यजुर्वेद के 'आ ब्रह्मन ब्राह्मणो...' मंत्र में नारी को राष्ट्र का आधार कहा गया है तथा उससे बलवान, सभ्य व सुयोग्य याज्ञिक संतान की अभिलाषा की गयी है।

कालांतर में विसंगति देखिए कि वन्दनीया मातृशक्ति पाशुविक तथा अमानवीय अत्याचारों का शिकार हुई, उसे 'नारी नरक का द्वार', 'पैरों की जूती', 'विलासिता की वस्तु', 'बेजान वस्तु', आदि के रूप में भी प्रचारित किया गया है, यही नहीं, कहना न होगा कि प्राचीन युग की महान, विदुषी, शास्त्रज्ञ, राजनीति, दर्शन व प्रशासन आदि में प्रवीण यह नारी शक्ति अधःपतन की शिकार हो गयी। आज कन्याभ्रूण हत्या, बलात्कार व नग्नता जैसी कुत्सित प्रवृत्तियों ने नारी सशक्तिकरण को एक बड़ी चुनौती भी दी है, जिसके विरुद्ध जनजागृति अपेक्षित है। नारी अस्मिता, गौरव व वैभव की रक्षा के लिए आज अनेकानेक सांविधानिक प्रावधान किये गये हैं, किन्तु इनके ईमानदारी से क्रियान्वयन की अपेक्षा है। मानवाधिकार व उनके संरक्षण की व्यवस्था है, किन्तु इस दिशा में एक वातावरण विकसित करने की आवश्यकता है। यह सही है कि आज वन्दनीय मातृशक्ति देश-विदेश में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व प्रशासनिक सभी द्रष्टियों से सशक्त है तथापि समाज में नारियों के प्रति जो उत्पीड़नात्मक रवैया है उसे भी कदापि नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता। ऐसे में वस्तुतः आज भी नारी-जागृति, नारी-मुक्ति, व नारी-अधिकार की दिशा में महर्षि दयानन्द द्वारा प्रणीत आर्य समाज के सशक्त आन्दोलन की प्रबल आवश्यकता है। आओ हम सब इस दिशा में अपने कदम बढ़ाएं।

किन्नर से पिटते नर देखे

(नवरात्रि व्रत चेतना पर विशेष)

देवनारायण भारद्वाज

"बाबा बचो- बाबा बचो- बाबा बचो" सड़क पर पैदल चलते हुए लेखक को यह महोच्चार सुनाई दिया। महामधुर महोच्चार, जो स्कूटर पर बैठी एक युवती द्वारा किया जा रहा था। युवती पिछली सीट पर बैठी यह गुरुगुंजन कर रही थी कि यकायक आगे की सीट पर बैठकर चला रहे युवक ने स्कूटर को मेरे सन्निकट लाकर रोक दिया। बात यह थी कि मैं अपने सही हाथ पर पैदल चल रहा था, और वह स्कूटर गलत हाथ पर आ रहा था। मुझे सही पारपथ से दूसरी ओर जाकर अपने स्थाई दुकानदार से फल क्रय करने थें स्थाई होने से धोखे से भिड़ा दिये जाने वाले गले फलों से राहत रहती है। वह युवती इस प्रकार से न चिल्लाती, तो मैं दुर्घटनाग्रस्त होकर कुछ उपचार में फंसकर अपने संस्कार प्रचार के अभियान से हाथ धो बैठता। आज नवरात्रि महोत्सव के प्रथम दिवस पर उस युवती ने साक्षात् देवी बनकर मेरी जो रक्षा की, इसके लिए मैं उसकी वन्दना यों करता हूं-

देवीद्वारो विश्रयध्वं सुप्रयाणा न ऊतये। प्र प्र यज्ञं प्रणीतन॥
(ऋग्वेद 5.5.5.)।

प्रभु मातृशक्ति के द्वारा,
होता उद्धार हमारा।
सुनकर आह्वान हमारा,
खुल जाता द्वार तुम्हारा॥
देवी तुम्हारा द्वार श्रेष्ठ,
शुभ सुन्दर शुद्ध सुपावन।
करता शरण वरण इसकी,
वह गति पाता मन भावन॥
अन्दर अपना घर प्यारा,
बाहर संसार वसारा।
सुनकर आह्वान हमारा,
खुल जाता द्वार तुम्हारा॥
नित नित यज्ञ प्रेरणा,
करती नूतन रचनाएं।
देवार्चन मिलन संगठन,
दीनधर्म की गाथाएं॥
श्रद्धा से तुम्हें निहारा,
पाया श्रुति वैभव सारा।
सुनकर आह्वान हमारा,
खुल जाता द्वार तुम्हारा॥

नवरात्रि की देवियों के चित्र न केवल अखबारों में भरे पड़े हैं, प्रत्युत उनके चरित्र, पूजा की सामग्री, चुनरी, फूलमालाओं से बाजार अटे पड़े हैं, और मन्दिरों में धूप, दीप, नैवेद्य के थाल सजाकर गृहणियां लगातार पहुंच रही हैं। इतने व्रत-उपवास के होते हुए भी बोध-अबोध कन्याओं, विवाहित-अविवाहित नारियों के साथ हो रहे बलात्कार एवं हत्याचार की घटनाएं थामे नहीं थम रही हैं आधुनिक वैज्ञानिक प्रविधि का इस कदाचार में भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। घर लौट रही किशोरी के साथ दो युवकों ने छेड़छाड़ कर दीं साथ ही क्लिपिंग भी बना ली। इसे सार्वजनिक करने की धमकी भी देने लगे। पीड़ित परिवार दहशत में आ गया, और एसएसपी से शिकायत करने के लिए विवश हो गया। एक अन्य घटना पर दृष्टिपात कीजिए-

"ओए देख, वो जा रहा है माल" बाइक सवार शोहदों ने कुछ इसी अंदाज में आगे चल रही स्कूटी सवार दो युवतियों का पीछा कर, छेड़छाड़ कर दी। जब वास्तविकता पता चली, तो शोहदों के होश उड़ गयें फिर क्या था, जिनको युवती समझा था, उन किन्नरों ने सेंडल उतार कर शोहदों की जमकर धुनाई कर दी। शोहदों को दुम दबाकर वहां से भागना पड़ा। रामघाट मार्ग स्थित भीड़भाड़ से भरे बस अड्डे के पास जब किन्नरों ने शोहदों को धुनना शुरु किया, तो वहां तमाशबीनों का जमघट लगा गया। इस घटना को देखकर लोग चर्चा करने लगे कि नारियों को मां दुर्गा का रूप कहा जाता है, और नवरात्र में भी शोहदे उनके साथ छेड़छाड़ करने से बाज नहीं आ रहे। सरकार का ही नहीं, प्रचलित दूरदर्शन एवं दूरभाषण के द्वारा प्रसारित दुष्प्रचार का भी इसमें हाथ है। नरों को किन्नरों से पिटना धिक्कार है, धिक्कार है।

याद कीजिए महाभारत के युद्ध को। भीष्म पितामह देवव्रत कौरवों के प्रधान सेनापति होकर महाविनाश करते जा रहे थे। कहते हैं कि उन्हें इच्छामृत्यु का वरदान प्राप्त था। सारथी कृष्ण को शस्त्र उठाने के लिए बाध्य करके उनकी प्रतिज्ञा भंग कर चुके थे। फिर भी वे न्यायारूढ़ पाण्डवों की हार भी नहीं चाहते थे। यकायक वे कह पड़े कि शिखण्डी के सामने होने पर अपने आयुध नहीं चलाता हूं। फलस्वरूप नारीवेशधारी शिखण्डी सामने लाया गया, और अर्जुन के बाणों ने भीष्म पितामह को धराशायी कर दिया। आज के दुराचारियों! किन्नरों से पिटकर तो सावधान हो जाओ और देवियों पर किये जाने वाले अन्याय, अत्याचार बन्द कर दो।

दुष्कर्मों की गिर रही गाज।
युवराज हरो यमराज राज॥
गिर रहा ताज, मिट रही लाज।
मत बनो युवा दिग्भ्रमित आज॥

-'वरेण्यम्' अवन्तिका प्रथम रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.)

कथा : जब प्राणों पर बन आयी (सांसारिक ममता)

वचनेश त्रिपाठी

एक नदी के किनारे एक पेड़ था। उस पेड़ पर बन्दर रहा करते थे। बरसात आयी तो नदी में बाढ़ आने से उस पेड़ के चारों ओर पानी ही पानी आ भरा। बन्दर उस पेड़ पर ही घिर गये। नीचे नहीं उतर पाये। बाढ़ का पानी पेड़ के ऊपर बढ़ता गया और उस पानी में बहने से बचने के लिए बन्दर पेड़ के ऊपर ही ऊपर खिसकते गये। जितना-जितना पानी बढ़ता गया, बन्दर उतने ही ऊपर बढ़ते गये। उन बन्दरों में एक बंदरिया की छाती से उसका एक छोटा बच्चा भी चिपका था। वह भी बंदरों के साथ पेड़ के ऊपर की ओर बढ़ती गयी। उधर बाढ़ का पानी भी पेड़ की चोटी तक आ गया। बंदरिया अभी

तक तो अपना बच्चा छाती से चिपटाये हुए ही ऊपर चढ़ती गयी थी, लेकिन जब उसने देखा कि पानी इतना ऊपर पहुंचा गया है कि उससे वह बच नहीं सकती तो उसने उस बच्चे को तो छाती से हटाकर नीचे रख दिया और स्वयं उस पर पैर रखकर कुछ ऊंची हो गयी ताकि पानी से बची रह सके।

स्वामी रामतीर्थ यह कहानी सुना कर कहा करते थे कि जब परीक्षा का समय आया तो बंदरिया का अपने बच्चे के लिए जो प्रेम था, ममता थी, उसकी कलई खुल गयी- स्वार्थ ऊपर आ गया कि मैं कैसे बचूं? ऐसा ही हम सबका यह संसार है। हमारे प्रेम, स्नेह और मोह-ममत्व का भी उस बंदरिया जैसी दशा है। उसमें स्वार्थ मिला हुआ है। स्वार्थ के रहते बंदरिया जैसा जोखिम जब सामने आता है तो लोग नाते-रिश्ते और प्रेम-ममता सब भूलकर अपने बचाव, अपने सुख-आनन्द की चिन्ता पहले करते हैं, शेष की बाद में।

अवश्य पढ़ें

शताब्दी स्मृति ग्रन्थ माला प्रकाशन समिति, सोनीपत द्वारा प्रकाशित तथा आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा द्वारा मुद्रित एवं पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय द्वारा लिखित पुस्तक

वैदिक सिद्धान्त विमर्श

मूल्य : २५ रुपये
सम्पर्क सूत्र : 09412139333

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज के स्तम्भ व धनौरा के गौरव थे सेठ राधेलाल

सुमित अग्रवाल
मंडी धनौरा (अमरोहा)

आर्य समाज के यशस्वी कार्यकर्ता व उदारमना उद्योगपति सेठ राधेलाल ने धनौरा से लेकर मुम्बई तक के सफर में अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से आर्य समाज व भारतीय संस्कृति के लिए अहम योगदान दिया, तथा धनौरा का नाम रोशन किया। वैदिक विचारधारा आचरण की शुद्धता व कर्मफल के भोग का संदेश, देती हैं ये उद्‌गार आर्य उपप्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान डॉ0 यतीन्द्र कटारिया विद्यालंकार ने आर्य समाज मन्दिर धनौरा के सत्संग सभागार में शारदीय पूर्णिमा के अवसर पर यज्ञोपरांत सत्संग में प्रवचन करते हुए व्यक्त किये।

डॉ0 कटारिया ने कहा कि वेदों में वर्णित ज्ञान, कर्म व उपासना का सिद्धांत व्यक्ति निर्माण का मूलमंत्र है। वेदानुसार आचरण सत्य व शुचिता का आधार है। वेद में स्पष्ट है कि व्यक्ति जो भी करेगा, उसे उसका फल अवश्य भोगना है तथा किये गये कर्म की अच्छाई-बुराई को या प्रभाव को किसी भी रूप में कम नहीं किया जा सकता। जनपद के गांव घरोंट में जन्मे धनौरा निवासी सेठ राधेलाल के व्यक्तित्व व कृतित्व को आर्य समाज के इतिहास में प्रमुख स्थान दिया है। धनौरा नगरपालिका के 18 वर्ष चेयरमैन रहे सेठ राधेलाल ने धनौरा में राष्ट्रीय इन्टर कालेज की स्थापना की, तथा मुंबई में जाकर वहां पहचान बनायी। महाराष्ट्र सरकार द्वारा कई बार सम्मान प्राप्त सेठ राधेलाल मुम्बई में मानद मजिस्ट्रेट भी रहे।

इस अवसर पर आर्य समाज के मंत्री सुमित अग्रवाल को उनकी पुस्तक 'सुमित्रानन्दन पंत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' के प्रकाशन पर बधाई दी गयी। इस अवसर पर सुरेश गुप्ता, ब्रह्मदेव आर्य, नवीन आर्य, नरेन्द्र कटारिया, अनिल शर्मा, तेजपाल सिह, सुमित अग्रवाल, चेतराम आर्य आदि मौजूद रहे।

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 350/- तथा तीन बार की रु. 500/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

वैवाहिक कॉलम **रिश्ते ही रिश्ते**

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

विजय कुमार शास्त्री
झुंझनू (राजस्थान)

आर्य समाज पिलानी द्वारा 9 से 12 अक्टूबर तक चार दिवसीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन आचार्य उषर्बुद्ध के ब्रह्मत्व में किया गया। वेदपाठ स्मृति शास्त्री, रमाशास्त्री व मिनाक्षी शास्त्री द्वारा किया गया। मेरठ से पधारे युवा भजनोपदेशक सन्दीप आर्य ने अपने मधुर कण्ठ से महर्षि दयानन्द का गुणगान किया। इस अवसर पर अनेक लोगों ने नशामुक्त जीवन जीने की प्रतिज्ञा की। अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी श्रीमती कृष्णा पुनिया व वीरेन्द्र पुनिया ने महर्षि दयानन्द को अपना आदर्श बताया। श्रीमती पुनिया ने कहा कि यदि आर्य समाज न होता तो मैं इस स्थिति में आपके सामने न होती। इस अवसर पर पिलानी नगरपालिका के चेयरमैन विजय हलवाई, रामपाल सिंह आर्य, ओमप्रकाश आर्य, विनोद बदनगढ़िया, विजय कुमार शास्त्री, राधेश्याम जखोड़िया, डॉ0 सोम चौधरी, महीपाल सिहाग, संजीव पुनिया, मनोज शास्त्री, हनुमान सिंह स्योराण, धर्मव्रत शास्त्री, मा0 महेन्द्र पुनिया, कपूर सिंह काद्यान, महेन्द्र ओला, पवन अग्रवाल, विनोद शर्मा व अनेक महिलाएं आदि उपस्थित रहे।

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, हरिद्वार

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार/ प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस वर्ष भी 31 जनवरी 2017 को सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के चयन हेतु हिन्दी में निम्न प्रकार प्रस्ताव आमंत्रित हैं-

१. **स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार** **(आर्य विद्वान के लिए)**
२. **ब्र. अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार** **(नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए)**
३. **स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार** **(श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए)**

प्रथम व द्वितीय पुरस्कार सामान्यत: उन विद्वानों, ब्रह्मचारियों को प्रदान किये जाते हैं, जिनकी कोई निश्चित आय नहीं होती। तृतीय पुरस्कार के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं है। प्रत्येक पुरस्कार राशि रुपये 11,000/- (ग्यारह हजार मात्र) है। प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से, सम्पूर्ण विवरण सहित भेजने का कष्ट करें।

देवराज आर्य, मंत्री (09997070789)

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा (उ0प्र0) द्वारा मुद्रित व प्रकाशित

अत्यंत आकर्षक, बहुरंगी कलेवर, तथा उत्तम कागज युक्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ तथा लघु पुस्तकें (ट्रैक्ट्स)

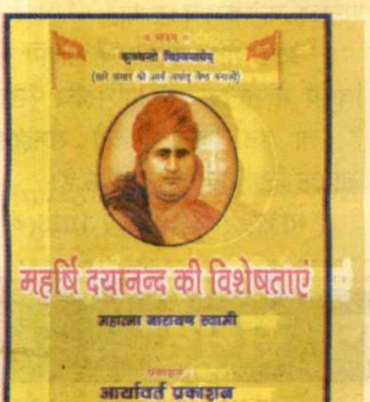

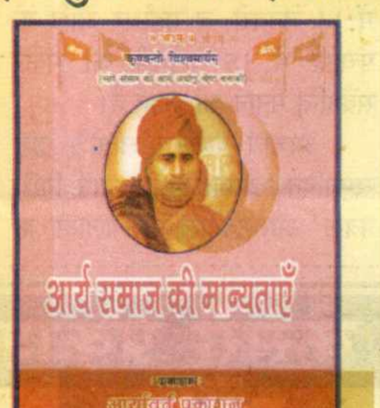

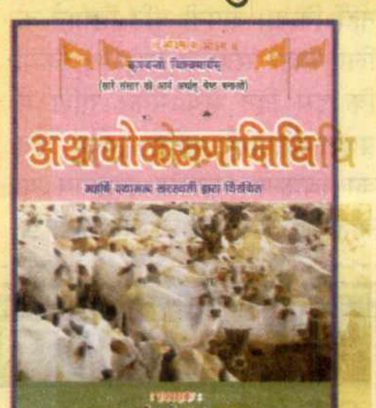

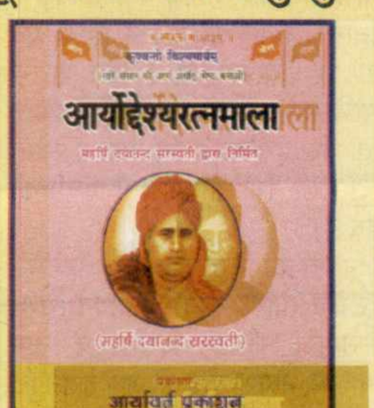

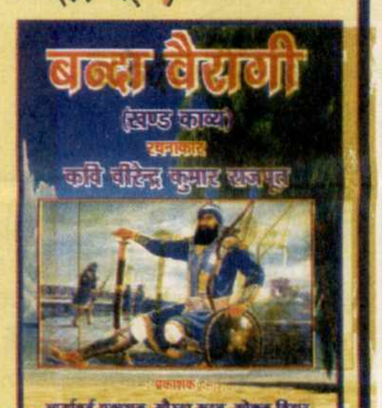

महर्षि दयानन्द की विशेषताएं

यह महात्मा नारायण स्वामी द्वारा ऋषिराज के गौरवमयी व्यक्तित्व व कृतित्व पर महत्वपूर्ण लघु पुस्तिका है।

पृष्ठ- 12, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम कागज, संस्करण- 2015,

मूल्य- 8/-रु0

आर्य समाज की मान्यताएं

आर्य समाज के सिद्धांतों पर महात्मा नारायण स्वामी द्वारा लिखित एक संग्रहणीय, पठनीय व स्तरीय लघु पुस्तिका।

पृष्ठ- 12, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण- 2015,

मूल्य- 8/-रु0

अथ गोकरुणानिधिः

इसमें महर्षि दयानन्द ने गऊ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए गोपालन, गोसंवर्द्धन, तथा गो वंश की रक्षा का आह्वान है।

पृष्ठ- 16, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त आकर्षक टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण- 2015,

मूल्य- 8/-रु0

आर्योद्देश्यरत्नमाला

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्मित इस लघु पुस्तिका में ईश्वर, धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप आदि सहित वैदिक सिद्धांतों का सम्यक ज्ञान है।

पृष्ठ- 12, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त आकर्षक टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण- 2015,

मूल्य- 8/-रु0

बन्दा वैरागी

कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत ने इस प्रबन्ध काव्य में बन्दा वैरागी की गौरवगाथा का वर्णन किया ह

पृष्ठ- 64, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम कागज, संस्करण- 2015,

मूल्य- 16/-रु0

तो आइए! आज ही आर्यावर्त प्रकाशन के साहित्य प्रचार मिशन से जुड़िए...

■ आज ही बुक कराएं अपना आदेश और घर बैठे पाएं दुर्लभ संग्रहणीय व जीवनोपयोगी बहुमूल्य साहित्य। ■ सभी प्रकाशनों पर 10 प्रतिशत की छूट। सभी पुस्तकें सैकड़ा के हिसाब से लेने पर विशेष छूट। न्यूनतम 500/- रु0 मूल्य तक के क्रय पर डाक-व्यय मुफ्त। आप अपनी अथवा किसी अन्य की कोई भी कृति मुद्रित व प्रकाशित कराने के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं। पता है- डॉ0 अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) ☎ : 05922-262033, 09412139333

www.thearyasamaj.org

प्रखर राष्ट्रचेता प्रकाशवीर शास्त्री

३० दिसम्बर जयन्ती पर विशेष

डॉ. बीना रुस्तगी, अमरोहा

सुप्रसिद्ध आर्यनेता, प्रखर सांसद, ओजस्वी वक्ता, राष्ट्रीयता के प्रबुद्ध प्रहरी, समर्पित व्यक्तित्व, हिन्दी भाषा के उपासक व चिन्तनशील राजनीतिज्ञ पं0 प्रकाशवीर शास्त्री का जन्म 30 दिसम्बर 1923 ई0 को उत्तर प्रदेश के अमरोहा जनपद (तत्कालीन जनपद मुरादाबाद) की तहसील हसनपुर के ब्लॉक– गंगेश्वरी के एक छोटे से ग्राम रहरा में श्री दलीप सिंह त्यागी के घर एक कृषक परिवार में हुआ। इनकी माता जी का नाम श्रीमती लीलावती था। तीन भाइयों में श्री प्रकाशवीर सबसे बड़े थे। उनकी पत्नी का नाम श्रीमती यशोज शास्त्री है। इनके दो पुत्र श्री प्रदीप कुमार तथा श्री प्रमोद कुमार हैं, जो अमेरिका में रहते हैं।

ग्राम रहरा में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्हें ज्वालापुर महाविद्यालय, हरिद्वार में प्रवेश दिलाया गया, जहां उन्होंने प्रथम श्रेणी में विद्याभास्कर की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद आगरा विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एम0ए0 संस्कृत की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे अपने प्रारम्भिक जीवन से ही आर्यसमाज में सक्रिय थे। उन्होंने सन् 1939 में विद्यार्थी काल में ही हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया। यह सत्याग्रह निजाम और हैदराबाद के हिन्दुओं पर ज्यादती के विरोध में आर्यसमाज ने चलाया था। श्री शास्त्री जी इस सत्याग्रह में भाग लेने वाले सबसे कम उम्र के थे।

शास्त्री जी की भाषण शैली अनुपम थी। सामयिक समस्याओं व आर्य समाज के सिद्धांतों को वह जिस रोचक शैली में प्रस्तुत करते थे, उसके कारण सारे देश के आर्यसमाजों में उनकी बहुत मांग रहती थी। वे लोकसभा की गुड़गांव सीट से सर्वप्रथम सांसद चुने गये। वे पहली ही बार में संसद में प्रभावशाली व्यक्तित्व, हंसमुख स्नेही स्वभाव, विशाल हृदय तथा भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक होने के कारण एक प्रखर सांसद के रूप में उभरे। सन् 1962 में शास्त्री जी बिजनौर से तथा 1967 में हापुड़ से निर्दलीय सांसद के रूप में लोकसभा में चुने गये। 1974 में वे राज्यसभा के सदस्य बने। वे एक कुशल व सुयोग्य लेखक भी थे। वे हिन्दी एवं संस्कृत के विकास में जीवनपर्यन्त लगे रहे। शास्त्री जी ने कहा था कि 'यदि देश से उर्दू चली गयी, तो उसे पाकिस्तान आदि अन्य देशों में स्थान मिल जाएगा, यदि अंग्रेजी चली गयी, तो उसे इंग्लैण्ड आदि देशों में स्थान मिल जाएगा, परन्तु यदि भारत से हिन्दी चली गयी, तो विश्व में हिन्दी को कहां स्थान मिलेगा, यह विचारणीय प्रश्न है।'

उन्होंने अपने जीवनकाल में कई भवनों का निर्माण कराया, जिनमें– आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ का 'नारायण स्वामी भवन', वृन्दावन स्थित 'गुरु विरजानन्द कुटी' तथा 'आर्य समाज मन्दिर', हरिद्वार के नाम उल्लेखनीय हैं। सन् 1968–69 में गंगा की भीषण बाढ़ में जब हसनपुर, रहरा क्षेत्र का बहुत सा भाग जल में डूब गया तो शास्त्री जी दिल्ली से पत्रकारों और कार्यकर्ताओं का एक दल, अपने साथ खादर क्षेत्र के अध्ययन के लिए लाए। उनकी जन्मस्थली ग्राम रहरा चारों ओर से पानी में डूबी हुई थी। अन्ततः उन्होंने गंगा के तट पर एक विशाल बांध का निर्माण कराकर ही चैन की सांस ली।

शास्त्री जी आर्य समाज के प्रचारक थे। उन्होंने वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों का भारत बनाने का संकल्प लेकर राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया। सन् 1966 के गोहत्या बन्दी आन्दोलन के दौरान शास्त्री जी ने सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने की जोरदार माँग कर गोवंश को भारतीय आस्था का केन्द्र बिन्दु बताया था। शास्त्री जी ने समय–समय पर विदेशी कम्पनियों के मायाजाल से सावधान रहने की चेतावनी देते हुए स्वदेशी के महत्व को प्रतिपादित किया। उनका कहना था कि हमें जापान की तरह गांव–गांव में लघु उद्योग लगाकर स्वदेशी वस्तुओं का निर्माण करना चाहिए अन्यथा विदेशी कम्पनियां हमें आर्थिक गुलामी में जकड़ने में सफल होती रहेगी।

23 नवम्बर 1977 को रेवाड़ी (हरियाणा) स्टेशन के समीप हुई भीषण रेल दुर्घटना में उन्हें काल के क्रूर हाथों ने हमसे हमेशा के लिए छीन लिया। उस समय वे मात्र 54 वर्ष के थे।

"बड़े गौर से सुन रहा था जमाना / तुम्हीं सो गये दास्तां कहते–कहते।"

मकर संक्रान्ति की सही तिथि २२ दिसम्बर

सुमनकुमार वैदिक

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा जिस मार्ग पर करती है, उसे अयन कहते हैं। जिस दिन पृथ्वी सूर्य की तरफ झुककर गति करना प्रारम्भ करती है, वह उत्तरायण पर्व कहलाता है। उस दिन मकर संक्रान्ति होती है, तथा अगले दिन से दिनमान बढ़ने लगता है, तथा सौरमास का तपस्य मास प्रारम्भ होता है, जो अंग्रेजी कलैण्डर से 21 या 22 दिसम्बर को आजकल होती है, जो कभी 14 जनवरी को होती थी। 71 वर्षों में एक दिन का अन्तर आ जाता है, जो अब तक बढ़कर 24 दिन को हो गया है। वेधशाला 21–22 दिसम्बर से दिन बड़ा होना बताती है, जिसे सभी पंचांगों में भी देखा जा सकता है। फिर भी मकर संक्रान्ति 15 जनवरी को ही मनाते हैं, जिससे नवसंवत्सर तथा सभी माह की ऋतुओं में परिवर्तन आ रहा है।

पंचांगीय गणितों का दृक्कसिद्ध या वेधसिद्ध साम्य होना अतीव आवश्यक है, क्योंकि ज्योतिष गणित के सही होने की दृश्यमान ही पहचान है। अस्तु, दिनमान सबसे छोटा 22 दिसम्बर को और मकर संक्रन्ति या उततरायण पंचांग में दिखाया जाए जनवरी में, तो यह ज्योतिष गणित एवं वेधशाला में दृक्कसिद्धि के साम्य नहीं है। इस अन्तर का विचार करते हुए ग्रन्थों का संशोधन आवश्यक था। किंतु पंचांग निर्माताओं ने यह संशोधन नहीं किया। अपनी त्रुटि छिपाने के लिए मकर संक्रन्ति का अर्थ किया कि इस दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। राशियों, राहु–केतु का विवरण भारतीय ज्योतिष या वेदों में कहीं नहीं है, जबकि सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्रों का वर्णन अनेक बार आया है। यह ग्रीक से भारत में आया है, जो काल्पनिक है। राशि (होरा–चक्र) की वर्णमाला भी ग्रीक वर्णमाला एल्फा, बीटा, गामा है।, न कि देवनागरी या संस्कृति की वर्णमाला। सौरमासों का आरम्भ सूर्य की संक्रान्ति से होता है। संक्रान्ति का अर्थ है परिवर्तन। एक वर्ष में बारह संक्रान्ति होती हैं तथा बारह सौरमास, जिनका वर्णन यजुर्वेद में मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभस्, नभस्य, ईष, ऊर्ज, सहस्, सहस्य, तपस्, तपस्य नाम से है। वेद में 28 नक्षत्रों का भी वर्णन हैं मुगलकाल में हिजरी कलैण्डर, जो चांदमास के अनुरूप है, हमने भी सायन पंचांग छोड़ निरयन पंचांग, जो चान्द्रमासों पर आधारित है, अपना लिया। चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, माघ, पोष, फाल्गुन माह मानने लगे। चन्द्रमा ऋतु नहीं बताता। जिस प्रकार मुसलमानों के पर्व ऋतु–अनुसार नहीं हेते थे, हमारे भी पर्व ऋतुओं से हटने लगे।

आर्यों द्वारा ज्योतिष ज्ञान से दूरी बना लेने से यह ज्ञान स्वार्थी और अज्ञानियों के हाथ में जाने से गलत रूप में फलने–फूलने लगा। तिथिपत्रक गलत होने से हम अपने पर्व गलत ऋतुओं में मनाने लगे।

हमारे यहां मकर संक्रान्ति की तिथि पर बड़ा असमंजस है। बाल गंगाधर तिलक के पंचांग में 10 जनवरी को, वी0वी0 रमण के पंचांग में 13 जनवरी, तथा लहरी के पंचांग में 14 जनवरी, व महीधर आदि के पंचांगों में 15 जनवरी को मकर संक्रान्ति मनाने को कहते हैं।

आचार्य दार्शनेय लोकेश द्वारा सम्पादित 'श्रीमोहनकृति आर्ष तिथि पत्रक' और खगोल वेधशालाओं के अनुसार 21 या 22 दिसम्बर को मकर संक्रन्ति होनी चाहिए। यदि हम मकर संक्रान्ति मनमाने ढंग से मनाते रहेंगे, तो एक समय ऐसा भी हो सकता है कि सूर्य दक्षिण की ओर चल देगा, और हम मकर संक्रान्ति मना रहे होंगे। मकर संक्रान्ति पर्व का पौराणिक महत्व भी हैं यह पर्व सारे भारत में अलग–अलग नामों से मनाया जाता है। इस दिन लोग नदियों में स्नान करते हैं, तथा सूर्य को अर्घ्य देते हैं। तिलदान, तिलस्नान, उबटन के साथ तिलकुट का प्रचलन है। यह शीतऋतु का पर्व है, अतः दरिद्रों को कम्बल इत्यादि गर्म वस्त्रों के साथ खिचड़ी दान का महत्व है। उत्तरायण और दक्षिणायन प्रकृति में जहां होते हैं, वहीं हमारे जीवन से भी इनका संबन्ध होता हैं जीवन में ज्ञान, प्रकाश का काल उत्तरायण, अन्धकार, कष्ट का काल दक्षिणायन कहलाता है। वैदिक काल में ऋषि, मुनि तथा ज्ञानी जन यह विचारते थे कि जब उनके अपने जीवन में ज्ञान का प्रकाश होगा, तब काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार नहीं रह जाएगा, प्रभु का चिन्तन होगा, तो वह काल उनका उततरायण होगा। उसी काल में वह अपना शरीर त्यागते थे। भीष्म पितामह, माता मदालसा जैसे अनेक देव और देवियों ने अपने जीवन को साधना से उत्तरायण बना देह का त्याग किया।

इस दिन का ऐतिहासिक महत्व भी का रहा है। सन् 1761 में पानीपत का तीसरा युद्ध इसी दिन अहमदशाह अब्दाली और भाऊराव पेशवा की सेनाओं के मध्य हुआ था।

आप यदि ज्योतिष या पंचांग के विषय में तनिक भी अभिरुचि रखते हैं, तो इन बिन्दुओं को समझना आपके लिए अति आवश्यक है।

(मोबा. : ०९४५६२७४३५०)

आर्यावर्त केसरी प्रकाशन समूह

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

विश्व भर में वेद के प्रचार-प्रसार व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर-घर पहुंचाने को संकल्पित आर्यावर्त केसरी विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए देश-विदेश से प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित करता है। आवेदन संक्षिप्त जीवनवृत्त के साथ दिनांक 31 मार्च 2017 तक पहुंच जाने चाहिए। (आवेदन हिन्दी भाषा में ही स्वीकार किये जाएंगे)। पुरस्कारों की घोषणा 30 मई 2017 को की जाएगी। आवेदन निम्न प्रकार हैं-

* **अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक हिन्दी भाषा व भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान प्रदान करने पर- अन्तर्राष्ट्रीय आर्यरत्न पुरस्कार।**
* **राष्ट्रीय स्तर पर वेद के प्रचार-प्रसार, समाज-सेवा के लिए- राष्ट्रीय आर्यावर्त भूषण पुरस्कार।**
* **निःशक्त, गरीब, अनाथ, व गुरुकुलों की उत्कृष्ट सेवा व दानशीलता के लिए- आर्यावर्त सौम्या दानवीरश्री पुरस्कार।**
* **वैदिक साहित्य के विद्वान लेखक, कवि व पत्रकार के लिए- आर्यावर्त कलमश्री पुरस्कार।**
* **युवा लेखक, कवि, गायक, पत्रकार, समाजसेवी के लिए- आर्यावर्त युवा गौरव पुरस्कार।**

आवेदन भेजने का पता : सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
☎ फोन : 05922-262033, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

www.thearyasamaj.org

वेदों के काव्यार्थ के प्रणेता 'कविवर' वीरेन्द्र कुमार राजपूत

सामवेद तथा यजुर्वेद के काव्यार्थ के बाद चार भागों में किया अथर्ववेद का काव्यार्थ

डॉ० अशोक कुमार आर्य

कविवर वीरेन्द्र कुमार राजपूत नाम है उस व्यक्तित्व का, जो वैदिक धर्म और ऋषिवर दयानन्द के मिशन के प्रति पूर्णतः समर्पित है, यह नाम है उस मनीषि का, जिसने वेदों के सरल, सरस तथा सहज काव्यार्थ का बीड़ा उठाया है, यह नाम है उस मिश्नरी का, जिसे सोते-जागते समाज के हित-उत्थान तथा आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की ही धुन है। ऐसे काव्य मनीषि का अन्तरहृदय से अभिनन्दन।

कवि श्री राजपूत ने सृष्टि के आदि में परमात्मा प्रदत्त चारों वेदों का अर्थ सरल एवं सुललित काव्य में करने का शिव संकल्प लिया है, जिसे प्रभु की कृपा ही कहना चाहिए। वेदों की काव्यार्थ शृंखला में अथर्ववेदीय काव्यार्थ के प्रथम व द्वितीय भाग के प्रकाशन के बाद तृतीय भाग का प्रकाशन 'आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा किया गया है तथा शीघ्र ही इसका चतुर्थ भाग आपके सामने होगा।

आर्यसमाज के तीसरे नियम **'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'** से अनुप्राणित होकर उच्च कोटि के कवि श्री राजपूत जी ने वेदमाता की सेवा करना ही अपना परम धर्म माना है। वे अपने पावन पुरुषार्थ से वेदों के काव्यार्थ के प्रकाशन की दिशा में उद्यत हैं। आर्यावर्त प्रकाशन आदरणीय कविवर श्री राजपूत जी की समस्त काव्य कृतियों को प्रकाशित करने में अपना सौभाग्य समझता है। इसी शृंखला में दिनांक- 30 अक्टूबर २०१६ को दीपावली एवं ऋषि निर्वाण दिवस के अवसर पर आर्यसमाज, अमरोहा के यज्ञ मण्डप में आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित कविवर वीरेन्द्र कुमार राजपूत, देहरादून कृत 'अथर्ववेद (तृतीय भाग) काव्यार्थ' का भव्य विमोचन किया गया। सभी ने इस ग्रन्थ में किये गये काव्यार्थ की मुक्तकण्ठ से सराहना की। वास्तव में कवि ने जिस सरल, सुबोध व सरस प्रवाह में अपने कवित्तों व छन्दों से वेदमंत्रों की काव्यमय व्याख्या की है, वह अनूठी है। इन काव्यार्थों का जब लयबद्धता के साथ सुमधुर गायन किया जाता है तो जैसे वातावरण ही भक्तिमय हो जाता है।

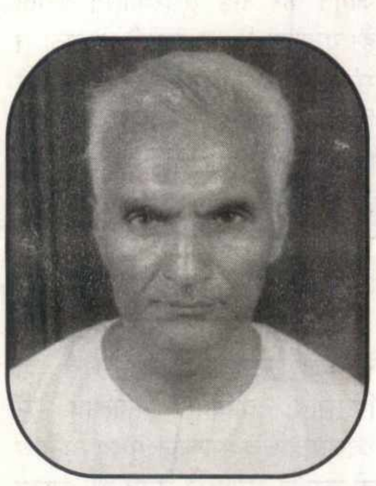

काव्यार्थ कर्ता कवि
वीरेन्द्र कुमार राजपूत

दीपावली के अवसर पर ३० अक्टूबर २०१६ को कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत कृत तथा आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा प्रकाशित अथर्ववेद काव्यार्थ भाग-३ का हुआ भव्य विमोचन। साथ ही अब काव्यार्थ भाग-४

समाज के उदारमना महानुभावों तथा सामाजिक संस्थाओं को ऐसे भावुक कवि तथा वेद-साधक की कृतियों को जन-जन तक पहुंचाने की दृष्टि से आगे आना चाहिए।

वैदिक विद्वान प्रोफेसर राजेन्द्र 'जिज्ञासु' अबोहर ने भी इस विषय में लिखा है कि 'धनवान समाजों तथा श्रीमंतों को इस ग्रन्थ की एक-एक सौ प्रतियां लेकर उपयुक्त अवसरों तथा पर्वों पर, सुपठित युवक-युवतियों और भक्तजनों को भेंटस्वरूप देनी चाहिए।

(मूल्य प्रतिग्रंथ विशेष छूट के बाद मात्र-१००/-)

कवि की कृतियों पर सम्मतियाँ

हमारे माननीय बन्धु कविवर वीरेन्द्र कुमार जी राजपूत हम सबके सम्मान तथा बधाई के पात्र हैं, जो गत कई वर्षों से चारों वेदों का हिन्दी पद्यानुवाद करने में लगे हुए हैं। आप दिन- रात इसी की साधना कर रहे हैं। विश्व के प्रथम विद्वान् कवि आप ही हैं, जिन्होंने इससे पूर्व दो वेदों- सामवेद तथा यजुर्वेद का पद्यानुवाद पूरा करके प्रकाशित भी करवा दिया है। अब अथर्ववेद का पद्यानुवाद पाठकों के हाथों में है। कहना तो बड़ा सरल है, परन्तु करके दिखाना अति कठिन है।

धन्य हैं हमारे कवि जी, जो निरंतर लक्ष्य सिद्धि की ओर पग आगे बढ़ा रहे हैं। कवि जी का यह सत्प्रयास अथर्ववेद विषयक भ्रान्त धारणाओं का निराकरण करने में बड़ा सहायक सिद्ध होगा। भ्रम-भञ्जन करना भी बहुत बड़ा पुण्य है।

प्रोफेसर राजेन्द्र 'जिज्ञासु',
वेद सदन, नई सूरज नगरी, अबोहर, पिन- १५२११६

आपका यह कार्य आर्य जगत् के लिए एक अमूल्य धरोहर है। आपने वेद के प्रत्येक शब्द को काव्यानुवाद में गुम्फित करने का प्रयास किया है। आप छन्द-शास्त्र के अधिकारी विद्वान् हैं। अलंकारों के प्रयोग में दक्ष हैं तथा रसाभिव्यक्ति के परिपाक् में आप सिद्धहस्त हैं। आपका काव्य में लालित्य, माधुर्य तथा भक्तिपूर्ण रस है।

इस काव्यार्थ में मूल भाव का स्पष्ट प्रकटीकरण सरल, प्रवाहपूर्ण, काव्यात्मक भाषा शैली में हुआ है, जो हमें आनन्द की प्राप्ति कराता है। **'रसात्मकं वाक्यं काव्यम्'** रसात्मक वाक्य ही काव्य है। एक अति गम्भीर विषय को कविवर श्री राजपूत ने अत्यन्त सरल शब्दों में प्रस्तुत किया है। आपने मूल मंत्र के सभी शब्दों को अपने काव्यार्थ में स्थान दिया है। कविवर श्री वीरेन्द्र राजपूत के द्वारा किया गया काव्यार्थ हमारी स्थायी धरोहर है। हमें विश्वास है कि इस काव्यार्थ को पढ़ने और गाने से आर्यजन वेद का अध्ययन करने के लिए अग्रसर होंगे।

डॉ० धर्मपाल आर्य,
पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वेदमंत्रों का अर्थ सभी नहीं जान सकते, केवल सुपठित विद्वान् ही जान सकते हैं। वेद में स्वीकार किया गया है कि "ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः। यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।" (ऋ० १/१६४/३९) जो विद्वान परंब्रह्म परमात्मा को नहीं जानता, वह ऋग्वेद आदि से क्या करेगा। वेदार्थ को समझाने के लिए कवि वीरेन्द्र राजपूत ने, अर्थ को न जानने वालों के लिए कविता में भाव प्रकट करके महत्वपूर्ण कार्य किया है। मैं उनके कवित्व वर्द्धन के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन देहरादून (उत्तराखण्ड)

कवि का संक्षिप्त परिचय- एक दृष्टि में

नाम	- वीरेन्द्र कुमार राजपूत
जन्म	- २० नवम्बर, सन् १९३६ ई०
पिता	- श्री उमराव सिंह शेखावत
माता	- श्रीमती मीनावती
पत्नी	- श्रीमती सुशीला देवी
जन्म स्थान	- ग्राम- झुझैला, पो०- फीना, जनपद- बिजनौर, उ०प्र०
शिक्षा	- एम०ए० (हिन्दी, इतिहास, समाज शास्त्र)

कवि का उल्लेख :
१- आर्यलेखक कोश (दयानन्द अध्ययन संस्थान, जयपुर, राजस्थान)।
२- हिन्दी काव्य को आर्य समाज की देन (स्वामी श्रद्धानन्द अनुसंधान केन्द्र, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)।

सार्वजनिक सम्मान :

१. मुरादाबाद की साहित्यिक संस्थाओं से प्राप्त सम्मान- अ०भा० साहित्य कला मंच, राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति तथा सागर तरंग प्रकाशन द्वारा क्रमशः साहित्यश्री, साहित्यार्जुन, हिन्दी गौरव, शब्द भास्कर सम्मान।
२. अ०भा० साहित्य संगम, आयड, उदयपुर (राजस्थान) का वर्ष २०१६ का काव्य कौस्तुभ सम्मान।
४. दयानन्द मठ, दीनानगर (पंजाब) में १२ जनवरी, सन् २००६ ई० को मुख्य अतिथि के रूप में सम्मानित।
५. वैदिक वानप्रस्थ आश्रम, मुरादाबाद, उ०प्र० द्वारा १ अप्रैल २०१२ को उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिए सम्मानित।
६. आर्य समाज, मण्डी बांस, मुरादाबाद, उ०प्र० द्वारा हिन्दी दिवस १३.९.२०११ पर सम्मानित।
७. ओ३म् प्रतिष्ठान, नई दिल्ली द्वारा यजुर्वेद (तृतीय भाग) काव्यार्थ पर वर्ष २०११ का लाला चतुरसेन आर्य पुरस्कार।
८. युवा समूह प्रकाशन, वर्धा (महाराष्ट्र) द्वारा वर्ष २०१२ के लिए यजुर्वेद (चतुर्थ भाग) काव्यार्थ पर पुरस्कृत।
९. यजुर्वेद (चतुर्थ भाग) काव्यार्थ पर गुनराम सोसायटी, भिवानी (हरियाणा) द्वारा वर्ष २०११ का साहित्य पुरस्कार (रु० ११०० पुरस्कार राशि व प्रशस्ति पत्र) तथा अथर्ववेद (प्रथम भाग) काव्यार्थ पर वर्ष २०१३ का साहित्य सम्मान (रु ११११ पुरस्कार राशि व प्रशस्ति पत्र)।
१०. वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून द्वारा दिनांक २७.१०.२०१३ के शरदोत्सव पर सम्मान।

कवि श्री राजपूत जी की प्रकाशित कृतियाँ

१. बांध सिर कफन चलो	प्रकाशन मार्च १९६६ ई०
२. दयानन्द महिमा	प्रकाशन १९९५ ई०
३. दयानन्द सप्तक (सवैया संग्रह)	प्रकाशन १९९९ ई०
४. दयानन्द शतक (कवित्त संग्रह)	प्रकाशन २००० ई०
५. प्रभु को नमन हमारा	प्रकाशन २००० ई०
६. मंगल सूत्र	प्रकाशन २००१ ई०
७. बन्दा बैरागी (खण्ड काव्य) प्रथम	प्रकाशन २००१ ई०
८. सामवेद शतक	प्रकाशन २००२ ई०
९. तारा टूटा	प्रकाशन २००३ ई०
१०. एक कर्मयोगी का जीवन संघर्ष (खण्डकाव्य)	प्रकाशन २००४ ई०
११. सामवेद सम्पूर्ण (दोहा छन्द में)	प्रकाशन २००४ ई०
१२. वैदिक विनय पत्रिका	प्रकाशन २००५ ई०
१३. यजुर् गीत माला	प्रकाशन २००६ ई०
१४. शूरता की सप्तपदी	प्रकाशन २००६ ई०
१५. प्रभु के गीत	प्रकाशन २०१० ई०
१६. यजुर्वेद (प्रथम भाग) काव्यार्थ	प्रकाशन २००८ ई०
१७. यजुर्वेद (द्वितीय भाग) काव्यार्थ	प्रकाशन २००९ ई०
१८. यजुर्वेद (तृतीय भाग) काव्यार्थ	प्रकाशन २०१० ई०
१९. यजुर्वेद (चतुर्थ भाग) काव्यार्थ	प्रकाशन २०११ ई०
२०. अथर्ववेद (प्रथम भाग) काव्यार्थ	प्रकाशन २०१३ ई०
२१. अथर्ववेद (द्वितीय भाग) काव्यार्थ	प्रकाशन २०१४ ई०
२२. अथर्ववेद (तृतीय भाग) काव्यार्थ	प्रकाशन २०१६ ई०

विशेष : इनमें से कुछ काव्य कृतियों के नवीन संस्करण प्रकाशित हो चुके

डॉ० सुदर्शन देव आचार्य पुरस्कृत

दिलीप कुमार जिज्ञासु
नुआपड़ा (उड़ीसा)।

आर्य जगत के उदीयमान युवा वैदिक विद्वान ओजस्वी वक्ता, विभिन्न संस्थाओं के मार्गदर्शक, उड़िया भाषा के अनेक पुस्तकों के सम्पादक तथा कुशल लेखक, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट ओड़िसा प्रदेश के संगठन मंत्री, गुरुकुल हरिपुर, जुनानी, जि0 नुआपाड़ा के सफल संचालक आचार्य डॉ0 सुरर्शन देव को परोपकारिणी सभा, ऋषि उद्यान, अजमेर में 133वां महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह 4 से 6 नवम्बर 2016 के पावन अवसर पर डॉ0 प्रियव्रतदास वेद वेदांग पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इस पुरस्कार में 21000/- रु0 की नकद राशि, शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया।

स्वामी विदेह का ओजस्वी मार्गदर्शन

मनीषा
रामगढ़ (झारखण्ड)।

ओउम् साधना मण्डल के संस्थापक स्वामी दयानन्द विदेह ने विवाह संस्कार में विजय वर्मा के सुपुत्र पीयूष एवं सुपुत्री प्रज्ञा के विवाह के अवसर पर समझाया कि दो शरीरों का मिलन विवाह नहीं है, बल्कि दो पवित्र आत्माओं का राष्ट्र-निर्माण के लिए विशेष कर्तव्य पूर्ति का व्रत लेना है। जिस-जिस तरह से माता-पिता का व्यवहार और सोच होती है, उसी प्रकार पीढ़ी का निर्माण, विकास पूर्ण होता है। शरीरविद्या और आहारविद्या के द्वारा सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त होता है। अतः पति-पत्नी ही बाद में माता-पिता बनते हैं माता-पिता पहला गुरु हैं, परन्तु दुर्भाग्यवश साधु-सन्तों को पहल गुरु बना लेते हैं। इससे माता-पिता अपनी जिम्मेदारियों से हट जाते हैं। प्रत्येक गृहस्थ को गुरु आचार्य का माता-पिता के बाद तीसरा स्थान है।

मंदिरों में पूजा-अर्चना के लिए जाते हैं, परन्तु माता-पिता का आदर नहीं करते, उनकी पूजा-अर्चना दिखावा मात्र है। घंटी बजाने का उद्देश्य इतना ही है कि यह प्रार्थना, उपासना का अलार्म है। घंटी न बजाने से परमात्मा अप्रसन्न होते हों- ऐसा कुछ नहीं। अतः मानव मात्र को वैदिक पद्धति से ओ३म् ध्वनि के द्वारा प्राणायाम, ध्यान के द्वारा ही सर्वशक्तिमान की उपासना सार्थक है। स्वामी जी ने अष्टांग योग के विषय में विस्तार से चर्चा की तथा बताया कि हमें अपने जीवन में नियमित रूप से योग प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। अन्त में श्री विदेह ने पांच नमस्ते का सामूहिक पाठ करवाया। पं0 वासुदेव शास्त्री ने विवाह संस्कार मंत्रों के अर्थ सहित संपन्न कराया।

समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ गुरुकुल कुरुक्षेत्र का १०४वां वार्षिक महोत्सव

छात्रों ने योगासन, जिम्नास्टिक व मल्लखम्भ पर हैरत अंगेज करबत दिखाकर लूटी खूब वाहवाही

कुरुक्षेत्र (हरियाणा)। कुरुक्षेत्र की उपायुक्त सुमेधा कटारिया ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा, ज्ञान, सामाजिक मूल्यों व संस्कारों से परिपूर्ण है। यह विद्यार्थियों में दया, साहस, साहयोग, परोपकार, कर्तव्यनिष्ठा व देशभक्ति की भावना जागृत कर उन्हें सुसंस्कारित बनाती है। गुरुकुल शिक्षा हमारी सभ्यता व संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसके बिना विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास व देशोत्थान संभव नहीं है। इसलिए आज गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनः राष्ट्रहित में अपनाने की आवश्यकता है।

सुमेधा कटारिया ने ये विचार गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 104वें दो दिवसीय वार्षिक महोत्सव में ध्वजारोहण के पश्चात् मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उपायुक्त ने कहा कि आज गुरुकुल कुरुक्षेत्र जैसी आदर्श मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने वाले शैक्षिक संस्थान की आवश्यकता है, ताकि संस्कारित शिक्षा से देशोत्थान हो सके। कठोर अनुशासन, कड़ी मेहनत व बहुआयामी उपलब्धियों के बल पर आज यह गुरुकुल अपनी एक अलग व अमिट पहचान बनाए हुए है। हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल व गुरुकुल के संरक्षक डॉ0 देवव्रत आचार्य एवं गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी की उच्च सोच, अथक परिश्रम, बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देशन तथा कुशलतापूर्वक किये गये कार्यों का ही प्रतिफल है कि आज यह गुरुकुल अन्य विद्यालयों के समक्ष एक उदाहरण है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र की शैक्षिक प्रगति में कदम बढ़ाते हुए इस गुरुकुल ने आज 104 वर्षों की ऐतिहासिक यात्रा पूर्ण कर शिक्षा के विकास को नव आयाम प्रदान किये हैं। उपायुक्त ने अपने कर-कमलों द्वारा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के शिक्षा, क्रीड़ा व सांस्कृतिक गतिविधियों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों के अतिरिक्त सर्वश्रेष्ठ अध्यापक, संरक्षक व लिपिक को पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया।

गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी ने मुख्य अतिथि के समक्ष गुरुकुल की शैक्षिक उपलब्धियों व गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र न केवल शिक्षा के क्षेत्र में, बल्कि क्रीड़ा, उन्नत गोपालन, गाय नस्ल सुधार, चिकित्सा, प्राकृतिक कृषि व समाज सेवा के क्षेत्र में अग्रणी है। गुरुकुल के छात्र आज शिक्षा, क्रीड़ा व अन्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाकर जिला, राज्य व देश का नाम रोशन कर रहे हैं। गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी ने मुख्य अतिथि को गुरुकुल की ओर से शाल, स्मृति-चिह्न व उपहार प्रदा' कर सम्मानित किया। गुरुकुल के योग साधकों ने मुख्य अतिथि के समक्ष मनोहारी योगासनों, जिम्नास्टिक, एक्रोबेटिक व लकड़ी मल्लखम्भ पर चित्ताकर्षक मुद्राएं प्रस्तुत कर सभी दर्शकों को दांतों तले उंगली दबाने पर विवश कर दिया। इस अवसर पर हरियाणा गोशाला संघ के प्रधान आचार्य योगेन्द्र, गुरुकुल प्रबन्ध समिति के सदस्य ओमप्रकाश खुराना, सह प्राचार्य शमशेर सिंह, प्रेस प्रवक्ता डॉ0 श्यामलाल शर्मा, संस्कृताचार्य नन्दकिशोर शास्त्री सहित अध्यापकगण व भारी संख्या में अभिभावकगण उपस्थित थे।

अवश्य पढ़ें
आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित रामधारी सिंह दिनकर कृत लघु पुस्तिका **आर्यसमाज**
मूल्य : ०८ रुपये
मोबा. 09412139333

ऋग्वेद ।। ओ३म् ।। यजुर्वेद

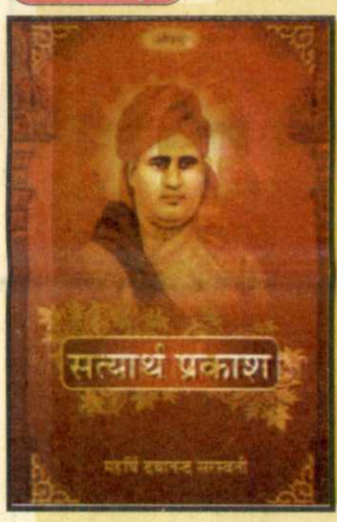

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ होगी तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का लागत मूल्य लगभग रु0 100/- प्रति ग्रन्थ होगा।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद अथर्ववेद

ईश्वर

पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

(१) ईशावास्यमिदं सर्व यत् किञ्च जगत्यां जगत्।
(यजुर्वेद- 40/1)

इस जगती अर्थात संसार में जितना जगत् अर्थात् प्रगति-समूह है, वह सब एक अधिष्ठातृ-शक्ति द्वारा ओत-प्रोत है जिसको ईश या ईश्वर कहते हैं।

(२) यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
(ऋग्वेद मण्डल- 10/121/13)

जो साँस लेने वाले और पलक मानने वाले (जीव धारियों) का अपनी महत्ता के बल से प्रकाशक या स्वामी है, जो दोपायों और चौपायों सभी को वश में रखता है उस सुखस्वरूप परमेश्वर की हम समग्र सामग्री से उपासना करें।

संसार में दो प्रकार के पदार्थ मिलते हैं-चेतन और जड़ या चर और अचर। जड़ या अचर वे हैं जो गतिशून्य हैं। जैसे कुरसी, मेज, आदि। चेतन या चर वह हैं जो गतिवान् या गति-प्रेरक हैं। चर या चेतन अपनी गति जड़ या अचर को उधर दे देते हैं। इससे जड़ पदार्थ भी गतिवान या चर जैसे हो जाते हैं। उदाहरण के लिये कलम जड़ है। वह स्वयं नहीं चल सकती। परन्तु जब मेरे हाथ में आती है तो मेरी गति को प्राप्त करके स्वयं चलने लगती है। उधार ली हुई वस्तु अपनी नहीं होती। कलम तभी तक चलती है जब तक मैं उसमें गति का संचार करता रहता हूँ। मैंने कलम को गति दी, यही नहीं इस पृष्ठ पर मैंने जो कुछ लिखा है वह वस्तुतः कलम का लिखा हुआ है। शब्द, वाक्य, उनमें ओत-प्रोत ज्ञान यह भी कलम से आविर्भूत हुआ है। अब यदि कोई कलम से पूछे कि क्या तुझे हिन्दी भाषा आती है। क्या तू अंग्रेजी आदि अन्य भाषायें भी जानी है? कलम क्या उत्तर देगी?कुछ भी नहीं! क्यों? इसलिये कि कलम ज्ञान शून्य, गतिशून्य अचेतन जड़ वस्तु है। वह यह भी नहीं समझती कि उसमें कोई कुछ पूछ रहा है। परन्तु जो कलम मेरे हाथ में हिन्दी लिख रही है वही किसी रूसी विद्वान् के हाथ में रूसी भाषा लिख सकती है। जो मेरे हाथ में ईश्वर-विषय का प्रतिपादन कर रही है वह किसी गणितज्ञ के हाथ में गणित के कठिन से कठिन प्रश्नों का समाधान करती है। कलम सब भाषाओं की ओर सब प्रकार की विद्याओं की प्रकाशिका है। परन्तु यह सब उस चेतन की चेतना का खेल है जो भाषा और भावों का कोष है। वह चेतन शक्ति क्या है? आप उसे देख नहीं सकते। न वह काली है? न मोटी, न लम्बी न चौड़ी। फिर भी है! एक चीज है। उस चीज के क्या गुण हैं? क्या लक्षण हैं? हम उसको कैसे पहचान सकते हैं? वह आँखों से दिखाई नहीं देती, कान से सुनाई नहीं देती। नाक से सूँघी नहीं जा सकती, त्वचा से छुई नहीं जा सकती, जीभ से चखी नहीं जा सकती। फिर भी है। हमको प्रतीत होती है। हम उससे इनकार नहीं कर सकते। क्यों?वह स्वयं सिद्ध है। आप सब चीजों से इनकार कर सकते हैं परन्तु अपने अस्तित्व से तो इनकार करना असम्भव है और कहेगा कि मैं नही हूँ"। कपिल मुनि ने सांख्य दर्शन में इसीलिये कहा था :-

देहादि व्यक्तिरिक्तोऽसौ वैचित्र्यात्। षष्ठी व्यपदेशादपि।
(सांख्य दर्शन- 6/1/2)

अर्थात् चेतन सत्ता विचित्र है। यह देह से अलग है। परन्तु देह के प्रति अंग को चेतन कर देती हैं। आँखों को देखने वाला और कान को सुनने वाला बना देना। इसी का काम है। यह न आँख है न कान। परन्तु आँख को प्रेरित कर के आँख हो जाती है और कान को प्रेरित करके काम। मैं देखता हूँ, यह मेरी आँख है। मैं सुनता हूँ, यह मेरी आँख है। मैं सुनता हूँ। यह मेरा कान है। मेरे आँख है। परन्तु मैंने आपको नहीं देखा। मेरा ध्यान दूसरी ओर था। मेरे कान हैं परन्तु मैंने आपकी बात नहीं सुनी। मेरा मन दूसरी बात में लगा था। इस प्रकार के वाक्य आप नित्य प्रति करते रहते हैं। यह वाक्य सार्थक हैं निरर्थक नहीं, क्यों? इसलिये कि आप वह विचित्र सत्ता हैं, आप अनुभव करते हैं कि मैं हूँ और मेरा दूसरी चीजों से सम्बन्ध है। अर्थात् आप चेतन हैं और आप जड़ चीजों को गति की प्रेरणा भी कर सकते हैं। यही भेद है चेतन और जड़ का। जितना आप अपनी प्रगतियों का विचार उरेंगे, उतना ही आपको अपनी सत्ता का अनुभव होगा।

इससे आप पर एक बात मुख्यतया विदित हो जाती है। वह यह कि अपनी इन्द्रियों से संसार की सभी चीजों का ज्ञान नहीं होता। कुछ चीजें अगोचर भी हैं। अदृष्य और अदृष्टव्य, अश्रुत और अश्रोतव्य। फिर भी हैं, आप इनसे इनकार नहीं कर सकते। इन सत्ताओं को आप कैसे जानते हैं। कुछ का ज्ञान आपको स्वयं हो जाता है। जैसे आप अपनी सत्ता का नित्य अनुभव करते हैं। और यदि कोई आपसे कहे कि "आप नहीं है" तो आप इसको मानेंगे नहीं। कुछ का ज्ञान आपको उन जड़ वस्तुओं के द्वारा होता है जिनमें उन चेतन सत्ताओं की गति ऋण रूप उपस्थित है। जैसे जब तक मैं साँस लेता हूँ, पलक मारता हूँ या शरीर के किसी अंग को हिलाता हूँ आप मेरे अस्तित्व को मानते हैं। साँस बन्द हो जाये, नाड़ी गतिशून्य हो, हृदय की धड़कन बन्द हो, पलक न उठें तो आप कहेंगे "यह मनुष्य मर गया"। अर्थात् मुख्य 'चेतन सत्ता' यहाँ से चली गई। अब यह शरीर नहीं अपितु शव है। जिस प्रकार जड़ नाक कान चेतन प्रेरित गति को प्रकट करते हुये अपने प्रेरक की सत्ता का प्रतिपादन करते हैं इसी प्रकार जगत् की अन्यान्य जड़ वस्तुयें अपनी गति के किसी अन्य प्रेरक की ओर संकेत करती है।

उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।
(यजुर्वेद- 8/41)

संसार की वस्तुयें सब पदार्थों का ज्ञान रखने वाले सूर्य के लिये केतु अर्थात् झंडियों का काम करती हैं, अर्थात् इन सब वस्तुओं से उस महान ईश्वर की सत्ता का पता लगता है, जिसके जानने से हम समस्त संसार का यथोचित ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इस वेद मन्त्र में दो मुख्य बातें बताई हैं। विश्व ईश्वर का पता देता है और ईश्वर के ज्ञान से विश्व का परिज्ञान होता है। अन्योन्याश्रय भाव है, अन्योन्याश्रय दोष नहीं। जिन वस्तुओं का परस्पर सम्बन्ध होता है उनमें से प्रत्येक दूसरे का परिज्ञान प्राप्त करती है। घड़ी से घड़ीसाज का पता चलता है और घड़ीसाज को समझकर हम घड़ी का परिज्ञान उपलब्ध करते हैं। आँख बताती है आँख से देखने वाला कोई आत्मा है। उसने आत्मा का पता दिया। जब आत्मा को समझ लिया तो आँख का प्रयोजन समझ में आ गया। क्योंकि आँख है आत्मा के ही किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये। कहीं पर रक्खी हुई मोटरकार को देखकर आप पूछने लगते हैं कि यह किसकी मोटर है। परन्तु मोटर की पूरी उपयोगिता तो मोटर के स्वामी की प्रवृत्ति को समझकर ही ज्ञात होती है। यदि मोटर का स्वामी व्यापारी है तो मोटर व्यापार के उपयुक्त है भी। यदि वह कृषक है तो कृषक के उपयोगी।

इसी प्रकार सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि, समुद्र, नदी सभी वस्तुयें जड़ होते हुये भी चेतन सदृश्य काम करती हैं। उनमें गति है परन्तु अपनी नहीं। किसी अन्य प्रेरक की। वैदिक भाषा में प्रेरक के लिये सबसे अच्छा शब्द 'सविता' है। क्योंकि वह समस्त जगत् को गति देता है। यहाँ प्रायः यह प्रश्न होता है कि जो ईश्वर आँख से दिखाई नहीं देता, उस पर कैसे विश्वास किया जाय। इस विषय में ऋग्वेद का एक मन्त्र है- **क्रमशः (वैदिक सिद्धांत विमर्श से साभार)**

यहां महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित 'आर्याभिविनय' नामक ग्रन्थ से ईश्वरस्तुति प्रार्थना विषयक मंत्र क्रमशः प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इस ग्रंथ का पुनः प्रकाशन आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा 'दयानन्द लघु ग्रन्थ संग्रह' के अन्तर्गत किया गया है।
-सम्पादक

आर्याभिविनय

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्तुतिविषयः

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः॥११॥
-ऋ0 १।२।७।१६

व्याख्यान- हे **"देवाः"** विद्वानों! **"विष्णुः"** सर्वत्र व्यापक परमेश्वर ने सब जीवों को पाप तथा पुण्य का फल भोगने और सब पदार्थों के स्थित होने के लिए, पृथिवी से लेके **"सप्त"** सप्तविध **"धामभिः"** धाम, अर्थात् ऊँचे-नीचे सात प्रकार के लोकों को बनाया तथा गायत्र्यादि सात छन्दों से विस्तृत विद्यायुक्त वेद को भी बनाया, उन लोकों के साथ वर्त्तमान व्यापक ईश्वर ने **"यतः"** जिस सामर्थ्य से सब लोकों को रचा है, **"अतः सामर्थ्यात्"** उस सामर्थ्य से हम लोगों की रक्षा करे। हे विद्वानों! तुम लोग भी उसी विष्णु के उपदेश से हमारी रक्षा करो। कैसा है वह विष्णु? जिसने इस सब जगत् को **"विचक्रमे"** विविध प्रकार से रचा है, उसकी नित्य भक्ति करो।।११।।

प्रार्थनाविषयः

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्त्तैरराव्णः।
पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानों यविष्ठ्य॥१२॥
-ऋ0 १।३।१०।१५

व्याख्यान- **"अग्ने"** हे सर्वशत्रुदाहकाग्ने परमेश्वर! **"रक्षसः"** राक्षस, हिंसाशील, दुष्टस्वभाव देहधारियों से **"नः"** हमारी **"पाहि"** पालना और रक्षा करो। **"धूर्त्तैरराव्णः"** कृपण, जो धूर्त्त उस मनुष्य से भी **"पाहि"** हमारी रक्षा करो। **"रीषतः उत वा जिघांसतः"** जो हमको मारने लगे तथा जो मारने की इच्छा करता है, **"बृहद्भानों यविष्ठ्य"** हे महातेज, बलवत्तम! **"पाहि"** उन सबसे हमारी रक्षा करो।।१२।।
(आर्याभिविनय से क्रमशः)

आओ योग करें

इस स्तंभ के अन्तर्गत योग-ऋषि स्वामी रामदेव जी द्वारा प्रस्तुत योग संबन्धी सामग्री नियमित रूप से प्रकाशित की जाएगी। आशा है कि इस स्तम्भ से पाठकगण लाभान्वित होंगे और योग को अपनी जीवनशैली बनाकर 'योग युक्त विश्व- रोग मुक्त विश्व' की ओर उद्यत होंगे।
-सम्पादक

दीर्घ नौकासन

विधि :-

1. शवासन में लेटकर दोनों हाथों को सिर के पीछे मिलाते हुये सीधा कर दें।

2. श्वास अन्दर भकर पैर, सिर एवं हाथ तीनों धीरे-धीरे ऊपर उठाइए। नितम्ब एवं पीठ का निचला भाग भूमि पर लगा रहे, वापस आते समय श्वास छोड़ते हुए धीरे-धीरे हाथ, पैर एवं सिर को भूमि पर टिकाइए।

लाभ :- नौकासान के समान ही पेट तथा पीठ के लिए लाभप्रद है।

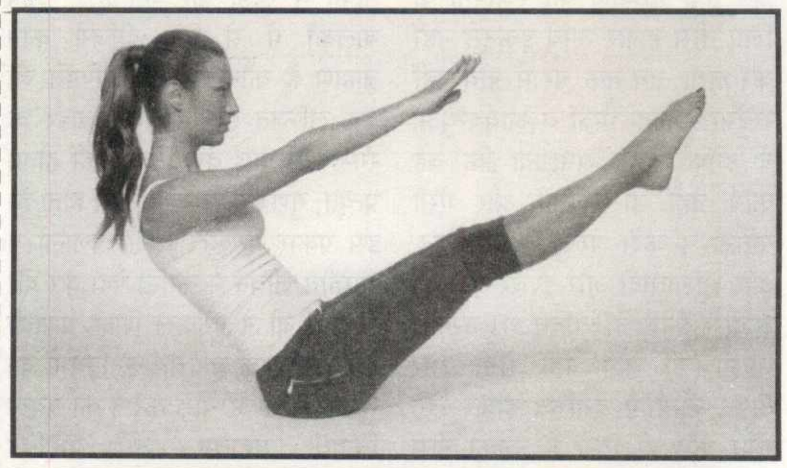

घर-घर तक पहुँचाएं
युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
का कालजयी ग्रंथ
सत्यार्थ प्रकाश
प्रकाशक- आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा
सम्पर्क सूत्र - 09412139333

www.thearyasamaj.org

आर्यों के हृदय सम्राट प्रखर राष्ट्रवादी स्वामी श्रद्धानन्द

२३ दिसम्बर शहादत पर विशेष

पं उम्मेद सिंह विशारद, देहरादून

स्वामी श्रद्धानन्द (पूर्व नाम मुंशीराम) का जन्म जालन्धर जिले के तलवन ग्राम में सन् १८५६ई० में हुआ था। इनके पिता लाला नानकचन्द जी उत्तर प्रदेश में पुलिस के अफसर थे। वे बनारस, बरेली आदि कई बड़े शहरों में पुलिस कोतवाल के पद पर रह चुके थे। मुंशीराम के जीवन में उस समय व्यापक परिवर्तन आया 'जब उन्होंने बरेली में महर्षि स्वामी दयानन्द के व्याख्यान सुने और उनसे ईश्वर धर्म आदि के सम्बन्ध में अनेक विचार परिर्वतन किये। इससे उनके जीवन में महान् क्रांति हुई। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और उसमें बताई हुई गुरूकुल शिक्षाप्रणाली का निर्देश और आवश्यकता प्राप्त की। उनको इस विचार ने बहुत अधिक प्रभावित किया कि जब तक भारतीय विद्यार्थी नवीन अंग्रेजी शिक्षा-प्रणाली को छोड़कर पुरानी वैदिक आर्ष-प्रणाली के पठन-पाठन का अभ्यास नहीं करेंगे तब तक भारतीय युवकों में जागृति नहीं आ सकती।

उन्होंने इतिहास का अध्ययन करते हुए भारत की पराधीनता का कारण जान लिया। उन्हें आभास हो गया कि अंग्रेजी शिक्षा मैकाले की शिक्षापद्धति का ही परिणाम है, जिसे जड़ से बदलने की आवश्यकता है।

महात्मा जी ने वैदिक संस्कृति व राष्ट्रवाद के प्रचार-प्रसार हेतु 'सद्धर्म प्रचारक' नाम से अखबार निकाला और गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली के लिए गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। ''सद्धर्म प्रचारक'' अखबार उर्दू भाषा में प्रकाशित होता था। कुछ वर्ष पश्चात् ''सद्धर्म प्रचारक'' हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने लगा। इसमें गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में भी प्रेरणात्मक लेख होते थे।

महात्मा जी ने अपने दृढ़ संकल्प के अनुसार महान् कार्य करने के लिए अपनी वकालत छोड़ दी और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान पद भी छोड़ दिया, तथा उन्होंने प्रतिज्ञा की, कि जब तक गुरुकुल की स्थापना के लिए तीस हजार रुपये इकट्ठे नहीं कर लूंगा, तब तक घर में पांव नहीं रखूँगा। अनेक मित्रों व आर्यबन्धुओं ने उनको बहुत समझाया कि यह कार्य नहीं हो सकेगा और ऐसी प्रतिज्ञा न करें। परन्तु वे दृढ़प्रतिज्ञ, और आशावादी और ईश्वर पर पूर्ण श्रद्धा रखनेवाले व्यक्ति थे। उन्होंने किसी की बात नहीं सुनी और अपने कार्य में दत्तचित होकर लग गये। कुछ ही दिनों में उनको तीस हजार रुपये प्राप्त हो गए। अब देश में शिक्षा सम्बन्धी क्रांति होनेवाली थी। परमेश्वर ने उनकी सहायता की। कांगड़ी ग्राम की भूमि प्राप्त होने पर गंगा के तट पर निर्जन वन में 1902 में गुरुकुल की स्थापना कर दी, किन्तु सभी को केवल यही चिंता थी कि इस निर्जन वन में कौन अपने लड़कों को भेजेगा, कैसे वहां के लड़कों का भरण-पोषण होगा, ऐसे अनेक प्रश्नों से महात्मा जी के मन को डांवाडोल करने का प्रयत्न किया जाता था, परन्तु महात्मा जी के हृदय में परमेश्वर पर अटूट श्रद्धा थी और स्वामी दयानन्द जी के 'सत्यार्थ प्रकाश' से उनको अटल प्रेरणा मिल चुकी थी, जिससे उन्होंने निर्जन वन मे बैठकर गुरुकुल जैसी महान् शिक्षण संस्था का आदर्श देश- देशान्तर में फैलाया। उनको सहायक भी मिल गये और भारत के सभी प्रान्तों के बच्चे भी इकट्ठे हो गये, कार्य बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न होने लगा।

एक बार एक कट्टर पौराणिक गुरुकुल देखने के लिये आ गया। उन्होंने यह जानकर बड़ा आश्चर्य प्रकट किया कि चारों वर्णो के बालक एक ही पंक्ति में एक आसन पर बैठकर भोजन करते हैं। यह अच्छा नहीं। महात्मा जी ने कहा हमें तो कोई भेद नहीं दीखता। अभी तो ये शिक्षा ग्रहण करने वाले बालक है। शिक्षा ग्रहण करके आगे जैसे ये अपने कर्म दिखलायेंगे, वैसे सबके सामने आजायेंगे। अच्छा मैं बालकों को एक पंक्ति में खड़ा कर देता हूँ। आप बालकों में से बता दीजिये कौन ब्राह्मण है कौन शूद्र है? पण्डित जी बड़े लज्जित हुए। सचमुच बाहर के रंगरूप से कोई वर्ण नियत नहीं होता। प्रत्युत, गुणकर्म से वर्ण नियत होता है। इस प्रकार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ने भारतीय जीवन में क्रान्ति पैदा कर दी। महात्मा जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली स्थापित करके ब्रह्मचर्य के नियमों का मुख्यरूप से अभ्यास कराने का प्रयत्न किया। महात्मा जी प्रतिदिन ब्रह्मचारियों को सन्मार्ग पर चलने का उपदेश देते थे। प्रात: सायं और मध्याह्न एक-एक बार सब ब्रह्मचारियों के कमरे में जाकर ब्रह्मचारियों को देख लिया करते थे। ब्रह्मचारी अपने आचार्य महात्मा जी को एक ही व्यक्ति में अपना मातृत्व और पितृत्व माने हुए थे। इस प्रकार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के द्वारा भारत में एक नई जागृति, नई चेतना का उद्‌गम हो रहा था।

उन्होंने फरवरी 1923 में ''भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा'' की आगरा में स्थापना की और मलकाना, राजपूत आदि नव मुस्लिम दो लाख से अधिक मुसलमान शुद्ध किये। स्वामी जी ने बता दिया कि प्राचीन आश्रम प्रणाली का पुनरुद्वार किया जाये। 25 और 16 वर्ष की आयु से पूर्व किसी युवक और कन्या का विवाह न हो। उन्होंने बाल विधवाओं को विवाह की अनुमति निससंकोच दिये जाने और उन्हें शास्त्रीय व्यवस्थानुसार कन्या ही समझा जाने पर बल दिया।

स्वामी जी ने आह्वान किया कि आर्यों की वर्णाश्रम पद्धति का पुनरुद्धार किया जाये। हजारों जाति उपजातियों को मिटा दिया जाये।

सन् 1925 में ईद के अवसर पर देहली निवासियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जितना तुम सहन करोगे और मुसलमान भाइयों को प्रेम का मार्ग दिखलाओगे उतना ही भगवान तुम पर कृपा करेंगे।

स्वामी जी का ईश्वर पर अटल विश्वास व श्रद्धा थी। इसी कारण उन्होंने अपना नाम श्रद्धानन्द रखा था। वे निडर व निर्भीक थे। देहली में उनके नेतृत्व में एक सार्वजनिक सभा के बाद जब जुलूस निकाला गया तो उनके सामने गोरखों की संगीने तन गईं, जिस पर स्वामी जी ने आगे बढ़कर अपना सीना खोलकर निर्भयता पूर्वक कहा- ''लौ मैं खड़ा हूँ, गोली मारो।'' 1919 में अमृतसर में कांग्रेस के अधिवेशन के वे सभापति बनाये गये।

23 दिसम्बर 1926 को एक मतांध द्वारा स्वामी जी पर गोलियों का प्रहार किया गया, जिससे गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के समुद्धारक, प्रखर समाज सुधारक, आदर्श आचार्य, कर्मयोगी नेता, दीनों-दलितों के परम उद्धारक, सच्चे ईश्वर भक्त, श्रद्धामूर्ति, आर्य जाति के हृदय सम्राट् तथा हुतात्मा सन्यासी का अमर बलिदान हो गया।

कैसे पाएं सफलता

यह तो आप सभी जानते ही हैं कि मसाला उद्योग जगत में एमडीएच ब्रांड मसालों की अपनी एक अलग पहचान है। शुद्धता और गुणवत्ता की जब कहीं चर्चा होती है, तो लोग एमडीएच प्रोडक्ट को एक मिसाल के रूप में पेश कर देते हैं। अपने मुंह से यहां कहने में तो मुझे थोड़ा संकोच जरूर हो रहा है, मगर हकीकत यही है कि इसके पीछे मसालों के करोबार की जो मेरी अच्छी सूझ-बूझ है, उसकी सबसे बड़ी भूमिका है। देश के बंटवारे के पहले जब हम अपनी जन्मभूमि सियालकोट में थे, तो वहां बाजार पंसारीयां में हमारे पिताजी का मसालों का कारोबार था, हमारी अपनी दुकान थी। चूंकि बचपन में मेरा मन पढ़ाई में लगता नहीं था और पिताजी का विचार था कि जिस काम में मन न लगे, उसे छोड़ देना ही बेहतर है, इसलिए मैंने उनकी रजामंदी से पांचवी क्लास का इम्तहान दिए बिना ही स्कूल को नमस्कार कर लिया। इसके बाद दो साल तक मुनीमी स्कूल में हिसाब-किताब की पढ़ाई का इंतजाम पिताजी ने कर दिया, ताकि मैं कारोबार के नफा-नुकसान को समझने की काबिलियत पा सकूं। फिर मैं पिताजी के साथ मसालों के काम में ही लग गया। उनके साथ रहकर मसालों की क्वालिटी की परख, मसालों की पिसायी, मसालों के पैकेट तैयार करना, माल का ऑर्डर बुक करना, सप्लाई करना इन सभी कामों का तजुर्बा मुझे उस छोटी उम्र में ही हो गया।

इसी बीच एक देश के दो टुकड़े हो गए और हमें अपना वजूद कायम रखने के लिए पाकिस्तान स्थित अपनी जन्म भूमि जहां मुसलमानों का बोलबाला था, छोड़कर हिंदुस्तान मे एक नयी जगह पर यहां दिल्ली में शरण लेनी पड़ी। उन दिनों भी तांगा चलाने से लेकर कई तरह के कामों में हमने अपना नसीब आजमाया, मगर योग्यता के अभाव में बात नहीं बना पायी और आखिरकार मुझे फिर मसालों के काम को ही अपनाना पड़ा। फिर परमात्मा की ऐसी कृपा बरसी कि इस काम के जरिए मैंने मसाला उद्योग जगत में ही एक कीर्तिमान कायम कर डाला।

योग्यता के अभाव में जिंदगी बोझ बनकर रह जाती है, इसलिए योग्य बनें। जिस क्षेत्र में आप आगे बढ़ना चाहते हो, उसे ध्यान में रखते हुए खुद में काबिलियत लाएं। ज्यादा बेहतर तो यही होगा कि किशोरावस्था में ही अभिभावक बच्चे की रूचि व क्षमता को ध्यान में रखकर उसे संबंधित क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें और इसके लिए योग्यता हासिल करने में मदद करें।

सफलता प्राप्ति के लिए कुछ सूत्रों पर ध्यान दें, सफलता अवश्य मिलेगी-

- अपना एक लक्ष्य तय करें, फिर उसके मुताबिक योग्यता हासिल करने का दृढ़ संकल्प लें।
- अहंकार को खुद पर हावी होने का मौका न दें। जब भी, जहां भी, जिससे भी कुछ सीखने का मौका मिले, विनम्र बनकर मौके का लाभ उठाएं।
- छोटी- से-छोटी जानकारी को भी नज़रअंदाज न करें, बहुत बड़ी मशीन को चालू करने के लिए भी सबसे पहले पॉवर वाला छोटा बटन दबाना जरूरी होता है।
- आपके पास क्या नहीं है, इसे लेकर अफसोस करने की बजाय उसे पाने के लिए उत्साहपूर्वक प्रयास करें।
- संबंधित क्षेत्र की अच्छी जानकारी रखने वालों से मेल-जोल बढ़ाएं उनकी संगति में रहकर भी आप आसानी से बहुत कुछ सीख सकते हैं।
- वक्त के पाबंद बनें। एक-एक पल को बहुमूल्य समझकर उसका सदुपयोग करें।
- निराशा को नजदीक न आने दें। कामयाबी मिलेगी ही-इस विश्वास के साथ कदम बढ़ाएं। कर्म में, संघर्ष में पूरी आस्था रखें।

वास्तव में कहा गया है कि पहले योग्य बनो, फिर उम्मीद करो। मतलब यह कि किसी भी क्षेत्र में कदम जमाना हो, तो उसके लिए उस क्षेत्र से संबंधित अच्छी जानकारी होना जरूरी है। आप यह समझ लें कि योग्यता को ही आदर मिलता है, वरना दो हाथ, दो पैर, दो आंखे, दो कान, जुबान और दिमाग तो परमात्मा ने सभी को दिए हैं। एक आदमी दिन-रात पत्थर तोड़ता अपने नसीब को कोस रहा है, तो दूसरा आदमी राष्ट्रध्यक्ष बना करोड़ों लोगों को नेतृत्व कर रहा है।

www.thearyasamaj.org

भारत की महान वीरांगना प्रकाशवती पाल

विजय कुमार गुप्ता

लाहौर के एक कन्या विद्यालय की अध्यापिका प्रेमवती ने कक्षा में पढ़ाते हुए अपनी छात्राओं से कहा कि हमारा देश महान होते हुए भी आज पराधीन है। उस पराधीनता को समाप्त करने के लिए सतत प्रयत्न भी किए जा रहे हैं और हमारा पंजाब भी इस पराधीनता से मुक्ति के लिए सदैव अग्रसर रहा है। एक छात्रा ने प्रश्न किया कि पंजाब में ऐसे कौन से प्रयत्न किए जा रहे हैं अध्यापिका प्रेमवती यह सुनकर हिचकिचाई और कहा कि इसका उत्तर कक्षा में नहीं दिया जा सकता। उत्तर देने में काफी समय भी लगेगा। छुट्टी के उपरांत तुम्हारे प्रश्न का समाधान किया जा सकेगा।

प्रश्न करने वाली छात्रा थी प्रकाशवती कपूर। प्रकाशवती के साथ उसकी सहेली लज्जादेवी ने भी एक दिन फुरसत के समय अपनी अध्यापिका प्रेमवती से यह विषय छेड़ दिया। प्रेमवती ने उसकी जिज्ञासा और उत्कट भाव को भांपकर बताया कि कैसे क्रांतिकारी लोग सक्रिय हैं और लाहौर में उन्हें बम बनाने और शस्त्र संचालन का प्रशिक्षण दिया जाता है। इन सब कामों के लिए बस आवश्यकता है धन की।

अब तो प्रकाशवती और उनकी सहेलियों का एक दल बन गया जो धन एकत्रित करता और प्रेमवती के माध्यम से उसे क्रांतिकारियों तक पहुंचा दिया जाता था। प्रकाशवती के मन में क्रांतिकारी दल में सम्मिलित होने की प्रबल इच्छा जाग उठी। इस विचार को उसने प्रेमवती के सामने प्रकट किया। प्रेमवती ने उसे एक पत्र देकर कहा कि वह क्रांतिकारी यशपाल से जाकर मिले। उस पत्र को यशपाल को देकर प्रकाशवती ने अपने दिल की बात कही। साथ ही यह भी कहा कि मेरे पिताजी इन सब बातों से दूर रखने के लिए मेरे पैरों में बेड़ियां डाल देना चाहते हैं। यशपाल ने कहा कि मैं समझा नहीं, बेड़ियों से आपका क्या तात्पर्य है। आप बड़े भोले हैं जो इतनी छोटी से बात भी नहीं समझते अर्थात् माता-पिता अपनी संतान को किसी विशेष मार्ग पर जाने से रोकने के लिए उसका विवाह कर देते हैं और इसी को कहते हैं 'पैरों की बेड़ियां डालना।'

आपके पिताजी आपकी शादी करना चाहते हैं- हाँ! और उन्होंने मेरी शादी तय भी कर दी है। तो इसमें बुराई क्या है? सभी लड़कियों की शादी होती है- आप भी इसका आनंद लें। इस कांटों भरे मार्ग पर चलने से क्या लाभ? देखिए! मैंने निश्चय कर लिया है देश की सेवा करने का और यह काम क्रांतिकारी दल में सम्मिलित होकर ही कर सकती हूँ। इस पर यशपाल ने कहा प्रकाशवती जी! मैं आपकी भावनाओं का सम्मान करता हूँ, किन्तु क्रांतिकारी दल में शामिल किए जाने का कोई वायदा भी नहीं कर सकता। तथापि मैं आपको लाहौर में अपने क्रांतिकारी साथियों से मिलाए देता हूं। उन्हीं के परामर्श से यह संभव हो सकेगा।

यशपाल ने प्रकाशवती को अपने क्रांतिकारी साथियों से मिलवा दिया और उसे दल में सम्मिलित करने की अनुमति मिल गई। अब क्या था? पिता के प्रतिबंधों से मुक्त होने की लालसा। पिता के नाम पत्र लिखकर छत से कूद पिछली गली से निकल कर घर छोड़ दिया। पत्र में लिखा था कि देश सेवा के कार्यों के लिए मैं घर छोड़कर जा रही हूं।

प्रकाशवती को पहले तो क्रांतिकारी गतिविधियों एवं उसके तौर-तरीकों का प्रशिक्षण दिया गया और फिर गोपनीय परचे बांटने का काम सौंपा गया। धीरे-धीरे वह इन सब बातों में पूर्णतया दक्ष हो गयीं।

पार्टी के काम का काफी विस्तार हो चुका था। बम बनाने की फैक्ट्री दिल्ली में खोली गयी। यशपाल को बम बनाने का काफी अनुभव हो चुका था। प्रकाशवती के साथ यशपाल को दिल्ली भेज दिया गया। प्रकाशवती के ठहरने की व्यवस्था महाशय कृष्ण के घर पर की गयी। इस प्रकार बम फैक्ट्री में काम करते-करते वे उनकी बारीकियों से भी दक्ष हो गयीं। दिल्ली असेंबली में बम विस्फोट के कारण भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को गिरफ्तार कर लाहौर जेल भेज दिया गया था। चन्द्रशेखर आजाद की योजना थी कि भगत सिंह को लाहौर जेल से छुड़ाया जाए। इसके लिए यशपाल को दिल्ली से लाहौर भेज दिया गया। प्रकाशवती दिल्ली में ही रहीं।

बम विस्फोट के कारण क्रांतिकारी भगवती चरण वोहरा की मृत्यु हो गई थी। लाहौर की बहावलपुर कोठी में बम फट जाने के फलस्वरूप भगत सिंह को छुड़ाने की योजना विफल हो गयी। यशपाल ने प्रकाशवती को अपने साले ध्रुवदेव के नाम से पत्र लिखा। पता नहीं कैसे उस पत्र के टुकड़े पुलिस के हाथ लग गए और पुलिस ने उन्हें पकड़ने के लिए महाशय कृष्ण के घर की घेराबंदी की किन्तु प्रकाशवती वहां से खिसककर ख्यालीराम गुप्त के घर पहुंच गयीं और वे गिरफ्तारी से बच गई।

दिल्ली बम विस्फोट का पुलिस को पता चल गया और अनेक लोग गिरफ्तार भी हो गए और कई लोग इधर-उधर भाग गए। प्रकाशवती को अब कानपुर में चन्द्रशेखर आजाद के पास पहुंचा दिया गया। आजाद ने प्रकाशवती को निशाना लगाना सिखा दिया जिसमें वे काफी अभ्यस्त हो गयीं। आजाद की प्रेरणा से उन्होंने अपना अंग्रेजी का ज्ञान बढ़ाया और स्वास्थ्य की दृष्टि से व्यायाम इत्यादि भी करने लगीं। 27 फरवरी 1931 को एल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद में आजाद के निधन से उन्हें काफी सदमा पहुंचा। उन्होंने अपना संरक्षक और शुभचिंतक खो दिया था। उसके कुछ दिन बाद ही इलाहाबाद में पुलिस के साथ मुठभेड़ में यशपाल भी पकड़े गये। प्रकाशवती को एक और झटका लगा और उन्हें ऐसा लगने लगा जैसे वह आश्रयहीन हो गई हों। किन्तु संकट से उबर कर वे क्रांति संगठन सूत्रों का स्वयं संचालन करने लगीं। अंततः जून 1934 में प्रकाशवती को दिल्ली से गिरफ्तार कर लिया गया।

यशपाल उन दिनों बरेली जेल में थे। जेल अधीक्षक मेजर मल्होत्रा अचानक यशपाल के पास जाकर पूछते हैं कि क्या वे मिस प्रकाशवती कपूर को जानते हैं?जी हां! जानता हूं। आप यह क्यों पूछ रहे हैं? मेजर मल्होत्रा ने मुस्कराते हुए कहा ' मिस प्रकाशवती कपूर ने डिप्टी कमिश्नर की मार्फत बरेली जेल में आपके साथ विवाह करने का प्रार्थना पत्र दिया है।' एक बार फिर भावुक होकर कहा कि- आप तो अभी दस-ग्यारह साल जेल में रहने वाले हैं- ऐसे में उसका त्याग तो देखिए। त्याग और धर्म की भावना तो केवल हिन्दू नारी में हीं हो सकती है।

यशपाल की सहमति लिखित रूप में प्राप्त कर बरेली जेल को अदालत के रूप में परिणित कर डिप्टी कमिशनर मि. पैडले और गवाहों की उपस्थिति में यशपाल और प्रकाशवती का विवाह संपन्न हुआ, उस समय यशपाल की माँ भी उपस्थित थीं जिनका आशीर्वाद दोनों को प्राप्त हुआ। अब प्रकाशवती कपूर प्रकाशवती पाल हो गयीं। जेल में विवाह के कारण लोगों को कौतुहल और आश्चर्य हो रहा था किन्तु आनंद के उन क्षणों में मिठाई बांटी गई। वहां से पुनः वे अपनी-अपनी जेलों में वापस गए। जेल से छूटने के बाद ही उन दोनों का मिलन हुआ।

चंद्रशेखर आजाद की प्रेरणा से ही प्रकाशवती का क्रांति-स्वप्न साकार हुआ। बाद में उन्होंने अपना शिक्षा-क्रम जारी रखते हुए कुछ दिन बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में भी अध्ययन किया। यह सत्य है कि प्रकाशवती को क्रांतिकारी बनाने वाले यशपाल थे तो यह भी निर्विवाद सत्य है कि यशपाल को लेखक बनाने में प्रकाशवती का योगदान है और वे सफल लेखक बन सके।

अवश्य पढ़ें

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित एवं महात्मा प्रभु आश्रित जी द्वारा लिखित पुस्तक

आर्य कन्या की सूझबूझ

मूल्य : ०५ रुपये

सम्पर्क सूत्र : 09412139333

काव्य जगत

भाग्य विधाता हो

महात्मा चैतन्य मुनि

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽ इद्राजा जगतो बभूव। य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥
(यजु० २३-३)

हे प्राण वाले प्राणियों के प्रश्वास प्रभो!
अप्राणी जगत् के भी दृढ़तर विश्वास विभो!
अपवनी महिमा से ही स्वयं राजाधिराज हो।
तुम अनन्त शक्ति सामर्थ्य सरताज हो।।
अद्भुत कारीगरी से सृष्टि के निर्माता हो,
जीव मात्र के तुम ही तो भाग्य विधाता हो।
तुम मनुष्यादि जीवों के गात रचियता हो।
गौ आदि प्राणियों के भी तुम ही नियन्ता हो।।
हे सुख-स्वरूप तू समस्त सुखों का दाता है,
तू ही तो प्रभो सकलैश्वर्य प्रदाता है।
उपासना की लगन प्रभु दृढ़तर हो जाए।
तेरा करूणामयी वरद्हस्त सर पर हो जाए।
श्रद्धा के समस्त उत्तम सामग्री अर्पण करें हम,
तन मन धन सब प्रभो तेरे समर्पण करें हम।
विशेष भक्ति से प्रभु आपके निकटतर रहें।
'चैतन्य' आज्ञा पालन में हम सदा तत्पर रहें।।

लिखें छन्द अभिराम

डॉ० राम बहादुर 'व्यथित'

चन्दन चर्चित गन्ध से, महक उठा परिवेश।
उषा परी अंगड़ाई ले, आई पिया के देश।।
छम-छम घुंघरू बज उठे, पक्षी करें विहार।
कोमल सरसिज खिल उठे, सुन वीणा के तार।।
स्वर्णिम आभा से निखर, थिरक उठा है व्योम।
अंजुरी भर मकरन्द ले, पुष्प चढ़ाते सोम।।
उषा पहनकर है चली, रवि-किरनों का हार।
होली नभ में हो रही, करने रंग-फुहार।।
भौंरा उड़कर आ गया, चूम रहा मकरन्द।
पवन गन्ध से तृप्त हो, उड़े व्योम स्वच्छन्द।।
भारत भू के लाल फिर, लिखें छन्द अभिराम।
प्रगति से चमके गगन, ज्ञान-सुरभि अविराम।।
प्रातकाल की लालिमा, रंगे पिया का गांव।
अनुरंजित होवें कमल, पुलकित हो हर ठांव।।

-विजय वाटिका, कोठी नं०-३
सिविल लाइन, बदायूं मो.: ०९८३७६१८७१५

दिनचर्या

शिव अवतार सरस, मुरादाबाद

'दिनचर्या' ऐसी हो अपनी, कम से कम हो उत्सर्जन।
व्यर्थ जलें ना लकड़ी उपले, व्यर्थ चलें ना अब वाहन।।
पैट्रोल-डीजल बर्बादी, धनाभाव ही लायेगी।
वेस्ट नॉट एंड वान्ट नॉट की नीति काम अब आयेगी।।
खुली न छोड़े टोंटी बत्ती व्यर्थ न फूकें अब बिजली।
पैदल चलें अधिकतम हम सब यही बचत होगी असली।।
बिना जरूरत इलैक्ट्रोन्स का करें नहीं हम इस्तेमाल।
रेडियो धर्मी विकिरण से बचकर ही हम होंगे खुशहाल।।
आज अभी की करें न इच्छा सोचें अगले कल की अब,
अगर आज सब सुख ले लेगें कल पायेंगें कैसे, कब,
केवल आज अभी की चिन्ता निश्चित होगी नादानी।
असमय अपव्यय से सचमुच ही कल होगी खींचातानी।।
अगर आज कुछ कुर्बानी कर कल की चिन्ता करते हम
नहीं अभाव से पीड़ित होंगे हालत होगी नहीं विषम
संसाधन का सम्यक वितरण निश्चित लायेगा उत्थान
सबका हित सबका विकास हो इसमें है सबका कल्याण।।
अतः सभी मिल कल की सोचें और सुधारें अपना कल
अगर आज के लिये जिये तो सचमुच होगें सभी विकल
अतिशय उत्सर्जन के कारण हुआ प्रदूषण है भारी
असमय मृत्यु उपस्थित होगी, सृष्टि नष्ट होगी सारी।।

www.thearyasamaj.org

२२ फरवरी से होगा वैदिक महोत्सव

पलामू (झारखण्ड)। नव स्थापित आर्य समाज द्वारा निकटवती ग्राम मौहम्मदगंज में 22 से 28 फरवरी तक वैदिक महोत्सव होगा। संयोजक जयप्रकाश के अनुसार आचार्य विद्या देव तथा योगाचार्य स्वामी कर्मवीर जी पधारेंगे। कार्यक्रम के संबंध में 08809165747 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

गुरुकुल का महोत्सव 28 से

हरिपुर-जुनवानी (उड़ीसा)। गुरुकुल का सातवां चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं महोत्सव 28 से 30 जनवरी तक होगा, जिसमें देश के लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों, साधु-संतों, गृहस्थियों एवं श्रद्धालु आर्यजनों की उपस्थिति रहेगी। इस अवसर पर ब्रह्मचारियों द्वारा कण्ठस्थ शास्त्रों का श्रावण एवं सांस्कृतिक प्रस्तुति भी होंगी। साथ ही गरीबों को अन्न-वस्त्र वितरण भी किया जाएगा। गुरुकुल के पदाधिकारियों ने श्रद्धालुओं से इस महोत्सव में शामिल होने की अपील की है।

आर्यावर्त केसरी

प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, अमित कुमार, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

हार्दिक आभार

आचार्य दिनेश्वर शास्त्री

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों, वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार व आर्यसमाज के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने हेतु आचार्य दिनेश्वर शास्त्री, मोहाली (पंजाब) ने 'आर्यावर्त केसरी' के 23 नये सदस्य बनाकर ऋषिवर के मिशन को गति प्रदान की है। आर्यावर्त केसरी परिवार आपके सहयोग के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता है। कोटिश: धन्यवाद, **-सम्पादक**

टंकारा समाचार, नई दिल्ली

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव 23, 24, 25 फरवरी 2017 को समारोहपूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर 'टंकारा समाचार' का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 15 जनवरी 2017 तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों। ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पृष्ठों से अधिक न हो, तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ईमेल- tankarasamachar@gmail.com पर 'वॉकमेन चाणक्य' टाईप में भिजवा सकते हैं। इसके लिये मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

-अजय सहगल, सम्पादक, टंकारा समाचार, ए-419, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024 (चल- 9810035658)

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com

वर्ष २०१७ के भव्य कलैण्डर

महर्षि स्वामी दयानन्द एवं अन्य महापुरुषों के भव्य आकर्षक रंगीन चित्र आर्ट पेपर पर।
साइज 18X23 इंच= 1000/- प्रति सैंकड़ा, 18X11 इंच 500/- प्रति सैंकड़ा। पर्वसूची-नियम।
1000 लेने पर समाज, फर्म, प्रतिष्ठान की छपाई नि:शुल्क।
आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ०प्र०), मोबा. : 09412139333

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 08273236003, 09412139333

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा-2017

आर्यावर्त केसरी प्रबन्ध समिति, अमरोहा (उ.प्र.) के नेतृत्व में

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा– 19 फरवरी से 26 फरवरी 2017 तक

प्रस्थान : 19 फरवरी 2017 को प्रात: 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा। (18 फरवरी 2017 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)

वापसी : 26 फरवरी 2017 को अमरोहा सायं 5:45 बजे आला हज़रत एक्सप्रेस से।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

पोरबन्दर, द्वारिका, भेंट द्वारिका, सोमनाथपुरी, टंकारा आदि ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों पर महात्मा गांधी जन्म स्थल, गुरुकुल, सुदामा महल, नागेश्वर महादेव, भालका तीर्थ- जहां श्रीकृष्ण को तीर लगा था तथा सोमनाथ मंदिर आदि दर्शनीय स्थलों का परिभ्रमण

: सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी- प्रबंध समिति द्वारा होगी। इस निमित्त 3500/- रूपये (तथा सीनियर सिटीजन के लिए केवल रु. 3000/-) की धनराशि देय होगी। यह राशि आप आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट द्वारा कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं अथवा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा- अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002, IFS Code SBIN0000610 में जमा करा सकते हैं।

या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। राशि 20 जनवरी 2017 तक प्राप्त हो जानी चाहिए। समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय है।

यात्रियों को आवश्यक निर्देश :- ● (AC III व II में भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। किराये का अन्तर देय होगा।) ● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, मतदाता परिचय-पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें। ● कार्यक्रम संयोजक को व्यवस्था परिवर्तन का अधिकार है। **आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं...**

-डॉ. अशोक आर्य- संपादक/संयोजक (09412139333)

कार्यालय- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

□ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), □ नरेन्द्रकांत गर्ग- व्यवस्थापक (09837809405), □ सुमन कुमार वैदिक (09456274350)

आर्यावर्त केसरी की प्रिन्टिंग यूनिट

आर्यावर्त प्रिन्टर्स

रूपये 225 में 1000 कलर्ड विज़िटिंग कार्ड

नोट : आप हमें अपने कार्ड का डिज़ाइन ई-मेल भी कर सकते हैं।

हर प्रकार के मल्टी कलर्ड पोस्टर, पैम्फलेट, हैण्डबिल, किताब, ट्रैक्ट, कैलेण्डर, समाचार, पत्र व पत्रिका, स्टीकर्स, बिल बुक, स्कूल कॉलेज के कलर्ड प्रोस्पैक्टस, कॉलेज मैग्ज़ीन, स्कूल डायरी, रिपोर्ट बुक, फीस कार्ड, फीस रसीद, रिजल्ट कार्ड, कलर्ड लैटर हैड, लिफाफे, कलर्ड कार्ड आदि के मुद्रण व प्रकाशन के लिए सम्पर्क करें-

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इ. कालेज, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, e-mail : aryawartkesari@gmail.com